

माया

पंचकम

लेखक - श्री. हितेन भुता

अनुक्रमणिका

- **माया पंचकम सत्र - 1**
- **माया पंचकम सत्र - 2**
- **माया पंचकम सत्र - 3**
- **माया पंचकम सत्र - 4**
- **माया पंचकम सत्र - 5**



माया पंचकम सत्र -1

श्रीमद जगतगुरु आदि शंकराचार्य का आभार

रसमय बोधी के आज के माया पंचकम स्तोत्र के अभ्यास के पहले सेशन में आप सबका बहुत आदरपूर्वक सम्मान से स्वागत है। आप सबको बहुत दिल से नमस्कार करता हूं और आपके आशीर्वाद की कामना करता हूं। एक बहुत महत्वपूर्ण टॉपिक पर हम अभ्यास करने

जा रहे हैं। आपका आशीर्वाद, आपका प्यार, और आपकी मौजूदगी इस अभ्यास को और अधिक इंटरेस्टिंग, रोचक, और आनंददाई बनाते हैं। तो आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमद जगतगुरु आदि शंकराचार्य को भी मैं बहुत दिल से वंदन करता हूं क्योंकि उनकी उंगली पकड़कर हम नए-नए रास्ते, नए-नए डायरेक्शन, नए-नए आयाम, और नए-नए एवेन्यू पाथवेज अखंडानंद की तरफ जाने के टूट रहे हैं। शंकराचार्य ने अनेक स्तोत्र की रचना की है। हमने अभी तक आत्म शतकम और आत्म बोध, ये दो स्तोत्र का अभ्यास किया है। आज उनके ही तीसरे स्तोत्र का अभ्यास करेंगे, माया पंचकम। यह स्तोत्र अलग-अलग है, अभ्यास का पर्पस अलग-अलग है। अभ्यास से कौन से नए रास्ते खुलेंगे वो अलग-अलग हैं, लेकिन कहाँ पहुंचना है, वो मंजिल, वो डेस्टिनेशन एक ही है, वो है अखंडानंद। शंकराचार्य ने अलग-अलग रास्तों से हमको उस अखंडानंद तक जाने का रास्ता दिखाया है, मार्ग दिखाया है। जिनको जो पसंद, कभी कुछ, कभी कुछ हमारे दिमाग में क्लिक कर जाता है। तो यह भी एक बहुत अद्भुत स्तोत्र है। शंकराचार्य के सभी स्तोत्र अद्भुत हैं और यह भी बहुत अद्भुत है।

माया की ताकत और जेल की कहानी

आज का स्तोत्र मैं शुरू करूं माया पंचकम। माया, माया का पावर क्या है, माया की ताकत क्या है, वह मैं कहूं, उसके पहले एक छोटी सी कहानी कहना चाहता हूं। एक गांव में एक जेल थी और जेल में गांव की जेल सब कैदी रहते थे। एक बार उस जेल में भारत के राष्ट्रपति का विजिट हुआ। वो गांव में आए थे, बोले चलो जेल में जाते हैं देखने के लिए। जेलर ने सब कैदियों को बोल दिया, आज राष्ट्रपति आएंगे तो सब लोग रिस्पेक्टफुली बात करना।

फिर राष्ट्रपति आए, पहले कैदी के पास गए। बोले, "आपको इस जेल में कोई तकलीफ है?" कैदी बोला, "तकलीफ तो है, मेरी साइज देखो, यहाँ सिर्फ दो रोट्टी मिलती है। मुझे चार रोट्टी चाहिए, कभी-कभी छह रोट्टी चाहिए।" राष्ट्रपति ने जेलर को कहा, "इनको ज्यादा रोट्टी दे देना।" हो गया। दूसरे कैदी के पास गए, दूसरे रूम में। उनसे पूछा, "आपको कोई तकलीफ है?" कैदी बोला, "हां, ये देखो रूम कितना गंदा है, छोटा है, लाइट नहीं है, पंखा नहीं है। आप इसको साफ करवाइए, लाइट

पंखा लगा दीजिए।” राष्ट्रपति ने ऑर्डर दिया, ”इसको कर दो।” उनका काम हो गया।

माफी और मुक्त करने की अपील

तीसरे कैदी के पास आए राष्ट्रपति। ”आपको कोई तकलीफ है?” कैदी ने राष्ट्रपति के पैर पकड़ लिए। आंखों में आंसू आ गए। बोला, ”आप कौन हैं, आपका पावर क्या है, मैं जानता हूं। आपकी ताकत, आपका सामर्थ्य क्या है, मैं जानता हूं। मेरी एक ही रिक्वेस्ट है। एक गलती हो गई मुझसे, एक गुनाह हो गया, तो आज मैं जेल में हूं। आपसे मेरी यही रिक्वेस्ट है, मेरा गुनाह माफ कर दो और मुझे मुक्त कर दो।” क्योंकि भारत के राष्ट्रपति के पास ऐसी ताकत है, उसको बोलते हैं मर्सी, दया। राष्ट्रपति, भारत के राष्ट्रपति, कोई भी जेल में कोई भी आदमी, कोई भी सजा हो, फिर वह फांसी की हो, जन्म टर्म की हो, कोई भी गुनाह हो, राष्ट्रपति उनको माफी दे सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने भी अगर उनको सजा दी हो।

श्रीमद जगतगुरु आदि शंकराचार्य के अद्भुत स्तोत्र और उनकी माया की शक्ति के बारे में अधिक जानने के लिए, आज का यह अभ्यास

हमारे लिए एक नई दिशा और नया मार्गदर्शन प्रदान करेगा। आपके आशीर्वाद और प्यार के साथ, हम इस मार्ग पर अग्रसर होंगे और अखंडानंद की प्राप्ति करेंगे।

राष्ट्रपति की शक्ति और माफी का अधिकार

राष्ट्रपति के पास पावर है कि वे किसी को माफी दे सकते हैं। राष्ट्रपति की मर्जी होगी तो वे माफ कर सकते हैं। ऐसा भारत के राष्ट्रपति के पास भारत के संविधान के कारण एक अधिकार है। तो वह आदमी ने कहा, "आपकी ताकत क्या है, मैं जानता हूं। मेरी गुनाह कोई माफ नहीं कर सकता, सुप्रीम कोर्ट भी माफ नहीं कर सकता। आप कर सकते हैं, आप मुझे छोड़ दो, मुझे मुक्त कर दो।" राष्ट्रपति ने उस कैदी को मुक्त कर दिया।

हम भी सब जेल में हैं इस संसार की, कभी खुशी, कभी गम, इस शरीर की, इस रिश्तों की, दुख की, पीड़ा की, समस्याओं की कैद में हम हैं। अकेलापन, डर, चिंता, घबराहट, ऐसा एक जेल में हम बंद हैं। कभी-कभी खुशी मिलती है, कभी गम भी मिलता है। और अगर हम इस जेल में बंद हैं, भगवान को क्या बोलते हैं हम? "हमें रोटी और दे दो, एक गाड़ी दे दो, एक बड़ा घर दे दो।" भगवान के पास जो अनंत शक्ति

है, उसके पास ताकत है हमें मुक्ति देने की। अखंड आनंद मिल सकता है। यह स्तोत्र हम पढ़ेंगे और अभ्यास करेंगे, इसकी ताकत है कि हमें मुक्ति मिल सकती है, अखंड आनंद मिल सकता है।

माया की अद्भुत शक्ति

अगर हम भगवान से यह मांगते हैं कि हमें दो रोटि ज्यादा मिल जाए, 25,000 कमा रहे हैं, 50 हजार कमा लें, एक गाड़ी, दो गाड़ी मिल जाए, यह सब बातें करना मतलब उस ताकत को नहीं पहचानना। माया, जो हमारा टॉपिक है माया पंचकम, माया की अद्भुत ताकत है। माया की ताकत राष्ट्रपति से भी कई गुना बड़ी है। माया हमें मुक्ति दे सकती है।

माया भी भगवान की एक शक्ति है, इसलिए माया को भी हम नमस्कार करेंगे, उनको वंदन करेंगे। माया हमें बहुत समय से माया में बांधे हुए है। अब हम माया को समझेंगे, उसका स्वीकार करेंगे, उसकी ताकत को समझेंगे, उसके पावर को समझेंगे। उनसे यही मांगेंगे, "हमें अखंड आनंद में जाने दो।" कभी खुशी, कभी गम, यह बच्चों के

खिलौनों की दुनिया है। कुछ और पाने की इच्छा, हमारा नाम हो जाए, हमारी जय-जयकार हो जाए, हमारी बात लोग मान जाए, यह सब बच्चों के खिलौनों जैसे काम बहुत कर लिए। अब हमें इनसे ऊपर उठकर अखंड आनंद में जाना है।

माया से मुक्ति का मार्ग

माया पंचकम में माया की शक्ति को पहचानेंगे। शंकराचार्य हमें माया की ताकत की पहचान कराएंगे। माया क्या अद्भुत और असंभव चीजें कर सकती है, उसे पहचानेंगे। माया से मुक्ति का मार्ग ऑटोमेटिक खुल जाएगा। कुछ चीजें होती हैं मुक्ति के लिए, फिर समझ मिल जाए तो मुक्ति हो जाती है।

आप कभी किसी नए होटल में गए, लॉक हो गए, कोई नया बाथरूम है, लॉक हो गए। अगर आपको समझ में आ गया कि वह लॉक कैसे बंद हुआ, तो आप उसे खोल सकते हैं। समझ उसको फिर खुल जाएगी।

हम जो अभ्यास कर रहे हैं, सबको अखंड आनंद का रास्ता मिल जाए। आज माया पंचकम में सिर्फ पांच श्लोक हैं। पांच श्लोक में माया की अलग-अलग शक्ति और ताकत की पहचान कराते हैं शंकराचार्य।

माया की ताकत को पहचानेंगे, उसके पावर को पहचानेंगे, वह क्या अद्भुत और असंभव चीजें कर सकती है, उसे पहचानेंगे।

माया से मुक्ति का मार्ग ऑटोमेटिक खुल जाएगा। कुछ चीजें होती हैं मुक्ति के लिए, फिर समझ मिल जाए तो मुक्ति हो जाती है। हम सबको अखंड आनंद का रास्ता मिल जाए, यही प्रार्थना है।

माया की ताकत को समझने की आवश्यकता

आप सर पीटते रहिए, उसके ऊपर तो कुछ नहीं होगा। अभी आप अंदर अकेले हैं, बाहर से कोई आ नहीं सकता है। अभी आपको ही समझना पड़ेगा लॉक बंद कैसे हुआ है, आप कैसे फंसे अंदर, और आप फिर खोल देंगे। समझ गए, तो खोल सकते हैं। माया की ताकत है, उसके पांच डायरेक्शन को हम समझेंगे। पांच श्लोक हैं, पांचों को समझेंगे। क्योंकि माया बहुत बड़ी ताकत है, हम भगवान को, उस

अद्वितीय शक्ति को, माया को यही रिक्वेस्ट करेंगे कि आपकी ताकत को समझने की हमें शक्ति दो।

समझ गए तो हम सहजता से माया से बाहर आने का रास्ता निकाल सकते हैं। माया से बाहर क्या है? अखंड आनंद है। माया के भीतर हैं हम, तो कभी खुशी, कभी गम। शंकराचार्य कहते हैं, माया एक जादू जैसा है। मैं कहूंगा, मेरा अभ्यास है, उसे ऐसा समझें कि जादू जैसा है। आप जब जादू देखने जाते हैं, जादूगर स्टेज पर खड़ा है, आपको मालूम है, वह जादू कर रहा है। उसके हाथ में दिखाता है, "देखो, हाथ में कुछ नहीं है," और फिर हाथ से कबूतर निकालता है।

जादू और माया का संबंध

जादू में क्या होता है? जो नहीं है, वह दिखता है। कभी-कभी जादूगर लोग स्टेज पे कोई लड़की खड़ा करते हैं, बॉक्स के अंदर उसको काट डालते हैं। बॉक्स को काट डालते हैं, तो लड़की दो तरफ से ऐसा लगता है कि दो टुकड़े हो गए। जो नहीं है, वह हमको दिखता है। और जो है, वह नहीं दिखता है। जादू का मतलब यह है कि जो नहीं है, वह दिखता है और जो है, वह नहीं दिखता है। फिर से कहता हूं, जादू क्या है? जो नहीं

है, ऐसा नहीं है कि वह लड़की के दो टुकड़े हो गए। ऐसा नहीं होता है, लेकिन आपको दिखता है कि एक लड़की के दो टुकड़े हो गए।

जो नहीं है, इंपॉसिबल है, वह दिखता है। और जो है, वह लड़की जिंदा ही है, लेकिन वह दिखता नहीं है। जादू का मतलब यह होता है कि जो नहीं है, वह दिखता है और जो है, वह एक्चुअल में दिखता ही नहीं है। यह माया है। माया में क्या होता है? माया की ताकत क्या है? कि हम सबको इस संसार में जो नहीं है, वह दिखता है। और जो है, वह एक्चुअल में दिखता ही नहीं है, वह महसूस ही नहीं होता।

माया से मुक्ति का मार्ग

इसीलिए हम इतने दुख में, पीड़ा में, कभी खुशी, कभी गम में रहते हैं। यह आभास की दुनिया में रहते हैं, क्योंकि जो है, वह दिखता ही नहीं। हमें जो नहीं है, वह दिख रहा है। इसलिए नरसिंह मता का एक श्लोक मुझे बहुत प्रिय है। मैं कहता हूं, हमेशा, "जागी ने जो तो जगत दीसे नहीं, उंगमा अटप खेल भासे।" गुजराती में है, अटपटा, गड़बड़, गड़बड़ दिखता है। यह दुनिया पूरी गड़बड़, गड़बड़ दिखती है। सब गड़बड़ दिखता है, इतनी दुख, इतनी पीड़ा, इतनी चिंता, इतना कलेश।

जगद्गुरु शंकराचार्य के अनुसार, जब आप माया में हैं, तो अटपटा दिखता है। "जागी ने जो तो जगत दीसे नहीं, उंगमा अटपटा खेल भासे।" चित चैतन्य विलास रूप ब्रह्म करे लटका। ब्रह्म से यह एक अद्भुत जादू में हम जी रहे हैं। पहली बात, इतना भी आपने समझ लिया ना कि आप जादू की दुनिया में जी रहे हैं। आपको डिजनीलैंड जाने की जरूरत नहीं है, जादू देखने जाने की जरूरत नहीं।

आप जादू के अंदर जी रहे हैं, आप जादू के स्टेज पर हैं। माया की शक्ति को पहचानना ही माया से मुक्ति का मार्ग है। इस माया पंचकम में शंकराचार्य हमें माया की अद्भुत और असंभव शक्तियों की पहचान कराते हैं। जब हम इस समझ को प्राप्त कर लेते हैं, तो माया से बाहर आने का मार्ग स्वयं खुल जाता है।

यह माया पंचकम हमें यह समझने की शक्ति देता है कि माया के जादू से बाहर निकलकर अखंड आनंद को प्राप्त किया जा सकता है। शंकराचार्य की यह रचना हमें माया की असली ताकत को पहचानने और उससे मुक्ति पाने का मार्ग दिखाती है।

संसार का अद्भुत जादू

अब चारों ओर जादू ही दिख रहा है। नया जादू देखने की जरूरत नहीं है, क्योंकि पूरा जो संसार है, वह स्वयं एक जादू है। क्यों जादू है? क्योंकि जो दिख रहा है, वह है नहीं और जो है, वह दिखता नहीं। आज हम वैसी दिव्य दृष्टि पाने की कोशिश करेंगे जिससे जो है, वह दिख सके।

कृष्ण भगवान गीता में कहते हैं: "विमूढानां पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः"। जिसका मतलब है कि जिनके ज्ञान के चक्षु खुल गए हैं, उन्हें सच्चाई दिखती है। माया से हमारे चक्षु बंद हो गए हैं। अब हम इन्हें खोलेंगे तो सच्चाई दिखेगी।

माया पंचकम का पहला श्लोक

आज हम माया पंचकम का पहला श्लोक का अभ्यास करेंगे। इसका उद्देश्य है कि हमारे जीवन में अखंड आनंद का मार्ग खुल जाए और हम सच्चाई को देख पाएं। शंकराचार्य के माया पंचकम के पहले श्लोक को संस्कृत में पढ़ते हैं:

**"निरूपमं नित्यं निरञ्जनं निष्कलं।
चिति सर्वविकल्पनादिशून्यं।
घटति जगदीशजीवभेदं।
त्वघटितघटनाघटीयसी माया॥"**

इस श्लोक का अर्थ है: माया वह शक्ति है जो असंभव को संभव करती है। शास्त्रों में कहा गया है कि आत्मा अमर है, आत्मा आनंदपूर्ण है, आत्मा अखंड आनंद है, लेकिन हमारा अनुभव दुख और पीड़ा का है।

माया का असंभव को संभव करना

शंकराचार्य कहते हैं, "त्वघटितघटनाघटीयसी माया।" यह माया का पावर है, जो असंभव को संभव करके दिखाती है। अगर हम पूर्ण आनंद हैं, अखंड आनंद हैं, सच्चिदानंद हैं, तो इतना दुख क्यों है? यह असंभव को संभव करने वाली माया है।

जीवन में दुख के अनेक एक्सप्लेनेशन मिलेंगे। लोग कहेंगे कि आपके दुख का कारण आपके कर्म हैं, आपके पास्ट की गलतियाँ हैं, आपके परिवार के पाप हैं, भगवान का कोप है, या किसी की बददुआ है। ज्योतिष के हिसाब से ग्रहों की स्थिति भी कारण हो सकती है। ये सब एक्सप्लेनेशन सही हो सकते हैं।

लेकिन शंकराचार्य एक ही कारण देते हैं: "त्वघटितघटनाघटीयसी माया।" यह माया का पावर है जो असंभव को संभव करके दिखाती है।

अखंड आनंद, सच्चिदानंद रूप आप जो हैं, उसको दुखी करके दिखाया जाता है।

माया का पावर ऐसा है कि वह असंभव को संभव कर देती है। शंकराचार्य कहते हैं कि यह माया ही है जो आपको इस दुख और पीड़ा का अनुभव कराती है। यह माया की शक्ति है जो आपके भीतर के अखंड आनंद को दुख में परिवर्तित कर देती है।

इसलिए, हमें इस माया की अद्भुत शक्ति को पहचानना और इसे समझना जरूरी है। इसके लिए हमें दिव्य दृष्टि की आवश्यकता है, जिससे हम सच्चाई को देख सकें और माया के जाल से मुक्त हो सकें। माया पंचकम का अभ्यास हमें इस दिशा में मार्गदर्शन करेगा और हमें अखंड आनंद की प्राप्ति का मार्ग दिखाएगा।

माया का अद्भुत प्रभाव

भगवान के कोप, श्राप, बददुआ, और ज्योतिष के हिसाब से ग्रहों की असमंजसता जैसे कई एक्सप्लेनेशन मिलेंगे। हम इन एक्सप्लेनेशन को खारिज नहीं कर रहे, सब एक्सप्लेनेशन सही हो सकते हैं। लेकिन

शंकराचार्य एक ही एक्सप्लेनेशन देते हैं, एक ही कारण बताते हैं: "त्व घटित घटना घटी यसी माया"। यह माया का ताकत है, यह माया का पावर है, जो असंभव को संभव करके दिखाती है।

अखंडानंद को दुख में परिवर्तित करना

शंकराचार्य कहते हैं कि माया असंभव को संभव बनाती है। अखंडानंद, सच्चिदानंद रूप आप जो हैं, उसको दुखी करके दिखाया जाता है। यह माया का पावर है जो करेले को मीठा और सेहत को कड़वा कर देता है। असंभव को संभव बनाना माया की ताकत है।

निरूपम नित्य निरंज के खंडे

शंकराचार्य खुद बोलते हैं कि मैं कौन हूं? "निरूपम नित्य निरंज के खंडे" - मैं यूनिक हूं, मेरे जैसा कोई नहीं है, मैं इटरनल हूं, हमेशा रहूंगा, कभी मरूंगा नहीं। आपके कोई पार्ट नहीं हो सकते, आप अखंड हैं। यह अस्तित्व अखंड है, इसके कोई पार्ट नहीं हो सकते। आप भगवान हैं, आप ब्रह्म हैं, आप अनंत हैं, शुद्ध हैं।

माया का भेद निर्माण

माया आपके चित में दो पार्ट क्रिएट करती है, भेद उत्पन्न करती है। घटती जगदीश जीव भेद - माया आपके भीतर भेद उत्पन्न करती है। यह भेद क्या है? माया आपको अलग, छोटा और जगदीश (जो नियम बनाते हैं) को अलग दिखाती है।

अखण्डता और माया का प्रभाव

आपका अस्तित्व अखंड है, लेकिन माया आपके भीतर भेद उत्पन्न करती है, जिससे आप स्वयं को एक अलग, छोटा सा व्यक्ति मानते हैं और नियम बनाने वाले जगदीश को अलग मानते हैं। माया का यह भेद निर्माण ही आपके दुख का मूल कारण है।

माया का प्रभाव इतना अद्भुत है कि वह असंभव को संभव बना देती है। इस माया से निकलने का एक ही मार्ग है, वह है ज्ञान और दिव्य दृष्टि। जब तक माया का भेद रहेगा, तब तक दुख और पीड़ा से मुक्ति नहीं मिल सकती। इसलिए हमें इस माया की पहचान करनी होगी और इसे समझना होगा।

शंकराचार्य का माया पंचकम हमें इस दिशा में मार्गदर्शन करेगा और हमें अखंड आनंद की प्राप्ति का मार्ग दिखाएगा। अखंडानंद और

सच्चिदानंद की ओर अग्रसर होने के लिए माया का भेद मिटाना आवश्यक है।

परिस्थितियों का गुलाम

मैं अपने जीवन जीने की कोशिश कर रहा हूं और इतनी बड़ी दुनिया, इतने सारे लोग, इतना बड़ा परिवार, इतनी बड़ी कंपनी, इतना बड़ा गवर्नमेंट, इतना बड़ा अस्तित्व यह सब मुझे कंट्रोल करते हैं। ऐसा अनुभव हम करते हैं कि मेरे पर कंट्रोल हो रहा है, मैं विक्टिम हूं, मैं परिस्थिति का गुलाम हूं, संजोग का शिकार हूं। दुनिया मेरे पर हावी हो गई है, मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। माया आपके भीतर भेद क्रिएट कर देती है, कि मैं एक छोटा सा नन्ना सा पावरलेस विक्टिम हूं और रूल बनाने वाले, रूल चलाने वाले, दुनिया चलाने वाले, मुझे कंट्रोल करने वाले वो शक्ति सब अलग हैं। ऐसा भेद क्रिएट करती है माया।

डर और अनिश्चितता में जीना

अब आप सोचो, अगर ऐसा भेद क्रिएट हो गया तो आपको कैसे आनंद आएगा? आप तो डर के चलेंगे ना, हमेशा डर के चलेंगे। कुछ भी हो सकता है, मेरे हाथ में क्या है? कभी कुछ, कभी कुछ। मैं बीमार पड़ सकता हूं, मर सकता हूं, मेरे परिवार में लोग बीमार पड़ सकते हैं, मर सकते हैं। मेरा रेपुटेशन, मेरा इज्जत, मेरा मान, मेरा प्यार खत्म हो सकता है। मेरा बिजनेस में घाटा हो सकता है, मेरा करियर खत्म हो सकता है, मेरे प्लान फेल हो सकते हैं।

यह अनुभव में हम जीते हैं, इस डर में हम जीते हैं क्योंकि भूल गए, माया ने भेद कर दिया।

बच्चों का निर्दोष आनंद

अब देखो, छोटे बच्चे हैं, एक-एक डेढ़ साल के बच्चे। मैं अभी मुंबई में था, अब अमेरिका वापस आ गया। मुंबई में जब गाड़ी में जाता हूं, घर से ऑफिस तो कभी-कभी रोड के ऊपर देखते हैं, झोपड़ पट्टी है, रोड पर लोग रहते हैं। छोटे बच्चों को मैं देखता हूं। अभी मैंने सिग्रल के पास देखा था, एक-एक साल का बच्चा होगा, उसकी बहन होगी बड़ी। वह बच्चा का चट्टी नहीं था, ऊपर मां ने कोई टीशर्ट पहनाया था, चट्टी नहीं था।

वह अपनी बहन के पीछे-पीछे दौड़ता था, खुशी-खुशी कुछ खेल रहे थे बच्चे। उनके हाथ में कुछ कपड़ा जैसा था, टूटा हुआ। वह एक-दूसरे को खींच रहे थे, खेल रहे थे एकदम खुशी से। वह बच्चे को मालूम नहीं, मैं रोड पर जी रहा हूं, इंफेक्शन लगेगा, वैक्सीन नहीं लिया है, ट्रैफिक है, गाड़ी चल रही है, कुछ भी मालूम नहीं। वह अपनी बहन के साथ खेल रहा है, अस्तित्व जो है ना, वह परम आनंद में मग्न है। वह छोटे बच्चे को मालूम नहीं है, लेकिन हम।

वह जो एक साल का छोटा बच्चा, चड़ी नहीं पहना है, वह खुशी से खेल रहा है, हंस रहा है। एकदम हंस रहा है, बहन के पीछे दौड़ रहा है। मैंने जब उसको देखा सिग्नल के पास, तो मेरे दिमाग में उनका पिकचर ऐसे सेट हो गया कि यह लड़का...

हमारी चिंताएं और बच्चों का निर्दोष आनंद

हमारी जिंदगी में गाड़ी है, एयर कंडीशन गाड़ी है, म्यूजिक चल रहा है, फिर भी हम इतनी चिंता में जीते हैं। हम इतना पहाड़ जैसा सर के ऊपर बोझ लेकर जीते हैं। ऐसा कैसे हो गया? हमारे पास फैसिलिटी है,

नॉलेज है, कपड़े पहने हैं, घर है, परिवार है। क्योंकि वह बच्चे के बुद्धि में अभी भेद नहीं है, माया का असर चालू नहीं हुआ। हमारे बुद्धि में भेद हो गया।

भेद और अलगाव का प्रभाव

हमारे बुद्धि में पहला भेद क्या हो गया? माया ने क्या किया? कि हम अलग हैं। मैं एक अलग हूँ और यह जो दुनिया चलाने वाला है, रूल बनाने वाला है, वह अलग है। यह भेद करने का जब काम होता है, तो आप अकेले हो जाते हैं। आप अस्तित्व से जुड़े नहीं रहते। जब आप पूरे अस्तित्व से जुड़ गए, यह भेद निकल गया, तो आप हम सब कनेक्टेड हैं। अगर आपने यह महसूस किया, मैं आपसे, मैं अमेरिका में, आप शायद इंडिया में, लेकिन हम सब कनेक्टेड हैं।

अस्तित्व के साथ जुड़ाव

इस बात को जब आपने महसूस किया कि आप पूरे अस्तित्व से कनेक्टेड हैं, यह पूरा अस्तित्व जो एक है, हम एक ही शरीर के, अस्तित्व के, एक ही चेतना के हिस्से हैं। एक ही चेतना हम सब में अभिव्यक्त हो रही है, अलग-अलग मेरे से बोल रही है, आपसे सुन रही है। हम सब जुड़े

हुए हैं, एक सिंगल एंटिटी हैं। और यह जो अस्तित्व जो है, उसमें ऐसा नहीं है कि कोई रूल बना रहा है और आपको परेशान कर रहा है। अस्तित्व के रूल्स हैं, नियम हैं, वो नियम ही अस्तित्व चलता है। नियम से ही अस्तित्व चलता है अपने आप।

अगर आपने वो नियम से चले, आप आनंद में, परमानंद में जिएंगे। जब आप अस्तित्व से जुड़े हुए हैं, प्रकृति से जुड़े हैं, आपने यह महसूस किया कि यू आर पार्ट ऑफ द होल, आप सबसे जुड़े हैं, सब आपके हैं, आप सबके हैं।

कोई भी प्राइवेट नहीं है। इसलिए देखो, सब धर्म ऐसा कहते हैं कि अपरिग्रह। परिग्रह मतलब सब जमा करो। मेरा पैसा, मेरा परिवार, मेरा धन, मुझे सब अलग करो। मेरा टाइम, मेरा ईगो, यह सबसे अलग होने की जो हमारी वृत्ति है, यह जो भेद हम क्रिएट करते हैं, कि मैं अलग हूं, यह भेद जो है हमारे दुख का कारण है।

शंकराचार्य क्या बोलते हैं, "घटती घटती जगदीश जीव भेदम। यह भेद माया का ही कारण है।"

भेद और आनंद का फर्क

क्रिएट करती है तो एक भिखारी का लड़का रोड पर रह रहा है, वो खुश है। क्यों? उसकी बुद्धि में अभी भेद क्रिएट नहीं हुआ। लेकिन बंगले में रह रहा है, लाखों करोड़ों की संपत्ति है, दिमाग में भेद क्रिएट हो गया। माया ने भेद क्रिएट कर दिया तो दुखी हो गए। आपने यह पहचान लिया। अभी देखिए, इसमें क्या है पहचानने की बात है, अनुभव की बात है। क्या आप सबसे जुड़े हैं? पूरे अस्तित्व से आप जुड़े हैं। कैसे जुड़े?

अस्तित्व के नियम और उनका पालन

एग्जांपल देता हूं। मैं कहता हूं, आप बोलो मैं अकेला हूं, मेरे को कुछ अस्तित्व से लेना देना नहीं है, कुदरत से मुझे कुछ लेना देना नहीं है, मैं अलग हूं, मैं सबसे जुदा हूं, और फिर ऐसा करके आप मेरे को किसी से कुछ लेना देना नहीं है, मेरे को कुछ पड़ी नहीं है। ऐसा सोच लो और फिर आप फर्स्ट फ्लोर से जंप लगाओ। तो हड्डी टूट जाएगी क्यों? क्योंकि अस्तित्व का नियम है, ऊपर से गिरे तो नीचे पड़ोगे। आपने यह नियम समझ लिया।

संभाल के नीचे आ जाइए। सीढ़ियों से तो आप गिरेंगे नहीं, आपकी हड्डी नहीं टूटेगी। तो आपके कोई अस्तित्व फेवर नहीं कर रहा है। कि चलो इनको कोई फेवर करो, इनको कुछ ज्यादा करो, ऐसा नहीं कर

रहे। आप नियम से चलो, शांति से नीचे उतरें, तो आपको कुछ प्रॉब्लम नहीं होगी। ऊपर से कूद मारोगे, हड्डी टूट जाएगी। नियम जो है, वो कोई दूसरा नहीं बना रहा है। वो कोई दूसरा आपके ऊपर इंप्लीमेंट नहीं कर रहा है। नियम नियम है।

संबंधों और अस्तित्व के नियम

आप जब अस्तित्व से जुड़ जाएंगे, वो नियम आपको समझ में आएंगे। किसी का इंसल्ट करो, किसी पर गुस्सा करो, किसी को क्रिटिसाइज करो, आपको अच्छा लगता है? आपको कोई क्रिटिसाइज करेगा, आपको कोई गुस्सा करेगा, आपको अच्छा नहीं लगता। आपको दुख होता है। आपके संबंध आप उनसे संबंध तोड़ देते हैं। आप ऐसा करेंगे तो आपके संबंध टूट जाएंगे। अस्तित्व का नियम है। लोगों को आदर दो, तो आपको आदर मिलेगा। लोगों को अप्रिशिएट करेंगे, आपको भी अप्रिशिएट मिलेगा। लोगों को रिस्पेक्ट करेंगे, आपको भी रिस्पेक्ट मिलेगा। लोगों को प्यार करेंगे, आपको भी प्यार मिलेगा। ये अस्तित्व का नियम है। आप वो नियम से चले, जहां गए जिसको मिले प्यार, आदर, सम्मान को अभिव्यक्त किया। प्यार से किसी के सामने

हंस दिया, जुड़ गए। जहां गए, कुछ अच्छा बोल सकते हैं तो बोले। नहीं बोल सकते तो चुप रह गए।

वास्तविक कनेक्शन और भेद का अनुभव

तो किया नहीं तो मौन रहो। अगर आपने पूरे अस्तित्व से यह ओनरशिप और कनेक्शन क्रीएट कर लिया और महसूस किया कि आप कनेक्टेड हैं, आपके परिवार से, आपके जो काम करते हैं, बिजनेस या प्रोफेशन, कस्टमर्स, आपके कस्टमर से भी आप कनेक्टेड हैं, नेबर्स, सोसाइटी, सिटी, देश, धर्म-सबसे आप कनेक्टेड हैं। आपकी कम्युनिटी इस भेद की दुनिया से बाहर आ गए और अपने आप को पहचान लिया कि आप अभेद हैं।

निरूपम नित्य निरंजन के खंडे, म चिति सर्व विकल्प नाद शून्य। जो पास्ट में हो गया, ना पास्ट में आपने भेद के कारण सबसे डिस्टेंस बना

दिया, सबसे अलग बना दिया अपने आपको। पास्ट में ऐसा हो गया, उसको भूल जाइए। सबके प्रति हम क्या करते हैं?

माया और इमेज की शक्ति

एक माया क्या है? आप सबके प्रति एक मन में इमेज बनाते हैं। सब दुनिया में सबके प्रति कुछ ना कुछ इमेज बनाई आपने। आपके दिमाग में सबके प्रति एक इमेज बनाई है। वह इमेज आपको लगता है कि यही रियलिटी है, यही सत्य है। जब आपने पहचान लिया कि वह इमेज अगर निकाल देंगे, छोड़ देंगे, पूरी दुनिया में सभी लोग प्रेम को चाहते हैं, सभी लोग प्यार चाहते हैं और प्यार को अभिव्यक्त करना चाहते हैं। प्यार आपको पूरी दुनिया से जोड़ देता है।

इसलिए बाइबल में क्या कहते हैं लव इज गॉड? क्यों? क्योंकि जब आप प्यार के अनुभव में हैं, तो जुड़ गए, कनेक्ट हो गए। और यह माया क्या करती है? आप बोलते हैं, नहीं-नहीं, आप अलग हैं, सब अलग है। किसी से बात नहीं करने का, किसी को मिलने का नहीं, ज्यादा किसी से इवॉल्व नहीं होने का, मैं अलग, वो अलग, सब अलग। मेरा धर्म अलग, उसका धर्म अलग, मेरी जाति में उसकी जाति अलग, मेरी लैंग्वेज उसकी लैंग्वेज अलग, मेरे नियम उसके नियम अलग।

भेद और माया की शक्ति

यह भेद भाव का जो जाल है, यह माया का पहला पावर है। जब भी आपके मन में यह भेद आएगा, मैं अलग हूं, मेरा परिवार अलग है, यह सब बाकी के अलग हैं, तो यह माया की शक्ति आप कंट्रोल कर रही हैं। और जब आपने एक कनेक्शन महसूस किया कि मैं पूरी दुनिया से कनेक्टेड हूं, सब लोगों से मैं कनेक्टेड हूं, मैं जो करता हूं, पूरी दुनिया पर असर होती है और पूरी दुनिया में लोग जो करते हैं, मेरे पर असर होती है।

यह जो दुनिया के नियम हैं, इसलिए हमने हमारा जो सबसे जूना वेद है, उसका नाम है ऋग्वेद। ऋग का मतलब क्या होता है? रुत। रुत का मतलब होता है नियम। बुद्ध धर्म में भी कहते हैं बुद्धम शरणम गच्छामि, धम्मम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि। धम्मम मतलब भी...

अस्तित्व के नियम और एकात्मता

नियम-ये जो नियम है ना, कोई जगदीश या कोई दूसरा नियम बनाने वाला नहीं है। अस्तित्व के नियम हैं, सिंपल से नियम हैं: प्यार से रहो, अपनी वाणी, वर्तन और व्यवहार में एकात्मता रखो। जो बोलो, वैसा करो। यह अस्तित्व का नियम है। अगर आप बोलेंगे कुछ और करेंगे कुछ, नियम तोड़ दिया, फिर आप दुखी होंगे। तो कोई दुखी नहीं कर रहा है आपको। अगर आपने बोला कुछ और किया कुछ, इंटिग्रिटी तोड़ दी, एकात्मता तोड़ दी, झूठ बोला, असत्य बोला-आपके जीवन में अगर एक सूत्र नहीं है, तो आप दुखी होंगे। कोई दुखी नहीं कर रहा है।

माया का भेद और जीवन के नियम

घट यति जगदीश जीव भेदम। आप भेद क्रिएट कर देंगे। देखो, अभी मेरे को दुखी किया, इसने नहीं। आपने नियम को फॉलो नहीं किया। जब आपने यह ओनरशिप ले ली कि यह संसार के सभी नियम आपके ही नियम हैं-भारत के जो भी नियम हैं ना, ट्रैफिक पर रुको, मत बजाओ-यह सब आपकी सुविधा के लिए, आपके आनंद के लिए है। अस्तित्व के भी जो नियम हैं-ना ज्यादा प्रोसेस फूड मत खाओ, यह रॉ

फूड खाओ-जैसे अस्तित्व ने दिया वैसे खाओ। अस्तित्व के जो नियम हैं, उसको आपने फॉलो किया।

माया के पावर और आनंद की प्राप्ति

जब आप कनेक्ट हो गए, तो आप परमानंद में स्थित हो जाएंगे। माया पंचक में माया का एक पावर आज हमने देखा, वह है भेद क्रिएट करना। आज हम टोटल पांच पावर को देखने वाले हैं। नेक्स्ट वीक हम यह देखेंगे, पैसा। नेक्स्ट वीक में माया का जो दूसरा पावर है, पैसे के कारण कैसे हम एक पशु जैसे बन जाते हैं। शंकराचार्य यह वर्ड यूज करते हैं, पशु। तो जैसे एक भेद क्रिएट होता है, वैसे एक दूसरा हमारा माया का पावर है कि हम परिग्रह करते हैं। भेद क्रिएट कर दिया कि मैं अकेला हूं, तो मुझे परिग्रह करना है, पैसा मेरे कंट्रोल में लाना है। और व पैसा कंट्रोल में लाने की हमारी वृत्ति से कितना भी हमें नॉलेज होगा, हम पशु से ज्यादा नहीं हो सकते।

तो आज हमने यह माया पंचक का पहला अभ्यास किया कि यह भेद जो हम जीवन में क्रिएट करते हैं, मैं अलग, अस्तित्व अलग-यह माया का एक पहला पावर है। और अगर आपको जैसे पूरे अस्तित्व से जुड़ गए, अभी इस क्षण में आपने महसूस किया ना, आप पूरे अस्तित्व से

जुड़े हुए हैं, सब आपके हैं, आप सबके हैं, तो अभी आप आनंद में आ गए। कोई अलग नहीं है, कोई दूसरा नहीं है। सब नियम भी आपके हैं। कोई नियम को रेजिस्ट नहीं किया-हम दुखी कब होते हैं? जो भी नियम होते हैं ना, उससे हम...

अस्तित्व के नियम और माया की शक्ति

झगड़ा करते एक हमारे सोसाइटी में नियम है कि जब कोई आता है ना तो वह **सिक्योरिटी कार्ड** बोलता है, साइन करो, नाम लिखो। एक हमारे रिलेटिव हमेशा झगड़ा करते, "मैं नाम नहीं लिखूंगा।" अरे, नियम बनाए हैं सुविधा के लिए। सब नियम को अपना लिया। **अस्तित्व** के सभी नियम को अपना लिया। भेद नहीं किया, "मैं अलग," या "नियम बनाने वाले अलग।"

अभेद की ओर यात्रा

तो आप जब नियम को समझेंगे, स्वीकार करेंगे, माया की शक्ति को समझेंगे, स्वीकार करेंगे और **अभेद** क्रिएट करेंगे-भेद नहीं करेंगे कि मेरे सब नियम हैं, मेरा ही सब है, मेरा अस्तित्व है, मेरी दुनिया है, मेरे लोग

हैं, सब कुछ मेरा ही है, सब धर्म मेरे हैं, सब भाषा मेरी है, सब देश मेरे हैं।
यह अपने आप को पूरे अस्तित्व जितना विराट कर देंगे, तो आप
अखंडानंद में स्थिर हो जाएंगे।

समापन और आभार

माया पंचकम का यह अभ्यास आज संपूर्ण करते हैं। पहला सेशन।
आप सबका बहुत-बहुत दिल से फिर से धन्यवाद करता हूं। तीन महीने
के बाद यह पहला सेशन किया, मेरे लिए बड़े आनंद की और गौरव की
बात है। यह गौरव आप मुझे देते हैं, यह आनंद आप मुझे देते हैं।
आपकी मौजूदगी से, आपके इंटरेस्ट से मुझे भी अभ्यास करने का
मोटिवेशन आता है। सब काम छोड़ के लगता है कि नहीं, चलो आज

अभ्यास करते हैं। यह अद्भुत बातें मैं कर सकता हूं आपके कारण।
आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

आप सबके आशीर्वाद चाहता हूं। आप सबसे बस प्यार और
आशीर्वाद चाहता हूं। ये माया पंचकम के पांच सेशन हम सबके लिए
आनंद का नया द्वार खोल सके। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।
अल्का बन, कृष्णा डॉक्टर लालका, जय श्री कृष्णा। अरे वा तिवारी जी,
जय श्री कृष्णा, जय श्री राम, मीना बन, जय श्री कृष्णा। थैंक यू, आप
सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। अभी नेक्स्ट सैटरडे मिलेंगे और जो
हमारा दूसरा श्लोक है, उसका हम अभ्यास करेंगे। थैंक यू।

माया पंचकम सत्र -2

एक नई दुनिया में कदम

मार्केट का काम था और मैं भी उसमें इंटरेस्ट लेता था। स्टॉक मार्केट के न्यूज़ पढ़ता था, कंपनी के एनालिसिस करता था। तो पिताजी ने एक बार बोला कि आपको हम हमारे स्टॉक ब्रोकर के पास लेकर जाते हैं। तो मुंबई में दलाल स्ट्रीट में जीजी बॉय टावर, शेयर बाजार का बहुत बड़ा बिल्डिंग है। वहां पर मुझे लेकर गए। फोर्थ फ्लोर पे ब्रोकर थे, तो उनका ऑफिस था। पिताजी ने इंट्रोड्यूस किया, "ये मेरा लड़का है

और काफी सारा रिसर्च करता है, सब कंपनी के एनालिसिस करता है।”

सपनों की राह पर

फिर जो ब्रोकर थे, वो बूढ़े आदमी थे, करीबन मुझे लगता है 65 साल के ऊपर उनकी उम्र होगी। फिर उन्होंने मुझे प्यार से बताया, ”अच्छा ठीक है, बताओ क्या आपका रिसर्च है अभी?” तो उस टाइम बहुत तेजी था। तो मैंने बोला, ”यह पार्टिकुलर कंपनी है, सीमेंट इंडस्ट्री की। यह कंपनी का बहुत एक्सपेंशन है, उसका ग्रोथ होगा।” ऐसा है वैसा है, फिर मैंने बहुत एक्साइटमेंट में पैशन में ऐसा कहा, ”बाय बरो और स्टिल, बाय बरो और स्टिल। लेकिन यह कंपनी के शेयर लेने चाहिए। मतलब कहीं से भी पैसा लाओ लेकिन यह कंपनी के शेयर लो।” इतना उसमें ग्रोथ होगा।

वास्तविकता की सीढ़ियाँ

तो वो ब्रोकर थे, मेरी बात सुनी फिर थोड़ा सा हसे और फिर उन्होंने बताया, ”अभी जब आप इस बिल्डिंग में आए तो सीडी चढ़ के आया ना, जो स्टेयर केस?” मैंने कहा, ”हाँ, मैं चढ़ के आया।” उन्होंने कहा, ”वो

स्टेयर केस के हर एक स्टेयर है ना, हर एक जो स्टेयर है ना, उसमें आपके जैसे हजारों एनालिस्ट सपने दफन हो गए हैं। आपके जैसे हजारों, ये सब पढ़ने वाले, सब ये होगा, वो होगा, उसके सबके सपने, सबके ड्रीम, सबके प्लान्स, सबके प्रोजेक्शन, वो हर एक पायदान पे हजारों लोगों के सपने दफन हो गए।” मैंने पूछा, ”आप ऐसा क्यों बोलते हैं?” उन्होंने कहा, ”आपने अभी तक ये शेयर बाजार में बंदी देखी नहीं है। अभी तो आप दो तीन साल से पिताजी के साथ स्टडी करते तभी तेजी तेजी चल रही है, मंदी नहीं देखी।

शेयर बाजार की वास्तविकता

जब मंदी आती है, जब शेयर बाजार डाउन जाता है, तो य पर कौवा भी नहीं दिखता है। सब भाग जाते हैं। ब्रोकर ने कहा, ”अभी देखो, आप आपको मालूम नहीं आप किस जगह पर आए हो।” फिर उसने मुझे मशवरा दिया, ”यह सब शेयर बाजार भूल जाओ, तुम तुम्हारा जो पढ़ाई करते हो, काम करते हो, करो। इसमें कुछ दम नहीं है।” मैं पूरा जिंदगी निकाल दिया इसमें। यह बात मुझे बहुत उस दिन सरप्राइजिंग लगी। कैसे कैसे नेगेटिव बात करते हैं, कैसी नेगेटिव बात करते हैं। खुद ब्रोकर होके एंकरेज नहीं किया मुझे।

शेयर बाजार का असली चेहरा

जब कोई व्यक्ति को किसी चीज का अप-डाउन और पूरा नेचर मालूम है, शेयर बाजार का, कि उसमें लोग बैकर हो जाते हैं, उसमें लोग खत्म हो जाते हैं। जिन लोगों को किसी चीज का एक्युअल नेचर मालूम है, जुआ, शेयर बाजार, दारू, उनके पास अगर कोई नया आदमी है, वो बोलेगा, "यह शेयर बाजार अच्छा है, ऐसा अच्छा है," तो क्या बोलेंगे? "आपने अभी तक देखा नहीं, दुनिया देखी नहीं है।" क्योंकि आप जिस जगह का अभ्यास करने जा रहे हैं, वो इतना कर देगा कि आपकी सारी एनालिसिस वैसी की वैसी रह जाएगी।

अवास्तविक उम्मीदों का नतीजा

वो ब्रोकर ने मुझे रियलिटी चेक दिया कि आप शेयर बाजार के बारे में इतनी जल्दी उम्मीदें मत लगाओ। इसमें लोगों को कैसे फैल हो जाता है, कैसे लोग हर चीज में भाग जाते हैं, इसका एक ऐतिहासिक पैटर्न है। मैंने सोचा कि किसी भी क्षेत्र में स्थिरता और धैर्य सबसे महत्वपूर्ण होता है। अगर आप अच्छे से रिसर्च करके काम करेंगे और

धैर्य रखेंगे, तो आप एक दिन सफल हो सकते हैं, लेकिन शेयर बाजार के बारे में इतनी जल्दी नतीजे मत निकालो।

माया की असली शक्ति

जगत तो भ्रमण है। अब मैं खुद अखंडानंद सत्य हूं। हो गया हो गया अखंडानंद में। तो आपने माया की ताकत को पहचाना नहीं। और जैसे वो बूढ़े ब्रोकर ने बोला था, "यह शेयर बाजार को अभी आप पहचानते नहीं," वैसे ही माया की ताकत को हम पहचानते नहीं। शेयर बाजार किसी के कंट्रोल में नहीं है, वैसे माया भी किसी के कंट्रोल में नहीं है। हम तो माया को नमस्कार ही करना है, ऐसे नहीं बोल सकते कि हम माया को कंट्रोल कर लेंगे। हम इतने पावरफुल नहीं हैं; यह बच्चों जैसी बात है। माया इतनी पावरफुल है कि उसकी बात आज के श्लोक में कर रहे हैं।

साधना का सही दृष्टिकोण

जब आप अखंडानंद में जाने का सोच रहे हैं, जब आप साधना में चले हैं, आपने साधना में कदम उठाया है, तो किससे आप पंगा ले रहे हैं? किस चीज का अभ्यास कर रहे हैं? किससे जूझने वाले हैं? किस चीज

से आप झंझट में उतर रहे हैं? जैसे अगर आप रास्ते में जा रहे हैं और एक मछर आ गया, तो आप उसे ऐसे करके हटा देंगे। लेकिन अगर हाथी आ गया, तो आप हट जाएंगे क्योंकि आप जानते हैं कौन सामने है, उसकी साइज क्या है, उसका ताकत क्या है, उसका पावर क्या है।

माया की ताकत और साधना की गंभीरता

माया ऐसा कुछ मछर जैसा नहीं है कि हटा देंगे। माया की ताकत और पावर इतनी अधिक है कि यह अच्छों को भी चित कर सकती है। यह बात शंकराचार्य ने भी समझाई है। इसलिए इस श्लोक का महत्व है। जो साधना में चलना चाहते हैं, हमें समझना होगा कि हम सब साधना में हैं और हम अखंडानंद की साधना में हैं। तो इस अभ्यास को छोटा नहीं समझेंगे। यह टाइम पास नहीं है, कैजुअल नहीं है। जैसे आप कोई छोटा मोटा कोर्स कर लेंगे और पीएचडी करेंगे, तो पीएचडी के लिए, आपको संगीन अभ्यास की जरूरत होती है।

माया की दुनिया में प्रवेश

बहुत बड़ा कमिटमेंट सामने है। हम माया की दुनिया में प्रवेश करने जा रहे हैं। माया को समझने की यात्रा पर निकलेंगे। देखिए, एक तो है, एक आदमी सीधा साधा जीवन जीता है। उसको कोई माया की पड़ी नहीं है, अखंड की पड़ी नहीं है। सुख आया तो सुखी, दुख आया तो दुखी, मन में झगड़ा आया तो झगड़ा करेगा। ऐसे ही जीवन चलता रहेगा-खाएगा पिएगा, मौज करेगा, मर जाएगा। उनको कुछ भी पड़ी नहीं है कि माया क्या है, ब्रह्म क्या है, अखंड आनंद क्या है। ऐसा कुछ पड़ी है, याद भी आता है, लेकिन फिर भूल जाता है।

साधक की प्रेरणा

हम साधक हैं, हम साधना में चलना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हम भी अखंड आनंद की दुनिया में प्रवेश करें। हमें भी भगवान ने प्रेरणा दी है। आप सबको भी प्रेरणा दी है। भगवान ने आपकी आत्मा में इस प्रेरणा को जागृत किया है कि इस दुनिया में जो हम रोज की जिंदगी जीते हैं, उसके पार एक अखंड आनंद की दुनिया है। जहां परम आनंद है, वह आनंद बाहर की परिस्थितियों पर डिपेंडेंट नहीं है। बाहर की कोई भी परिस्थिति हो, भीतर वही आनंद, वही प्रेम, वही शांति रहेगी।

जीवन का सबसे बड़ा मौका

यह मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा मौका है। अपॉर्चुनिटी की तरह है। जैसे आप कॉलेज में जाते हैं, तो बड़ी अपॉर्चुनिटी होती है-कैंटीन में जाओ, दोस्तों से दोस्ती बनाओ, बहुत सारी अपॉर्चुनिटी कॉलेज में होती है। लेकिन सबसे बड़ी अपॉर्चुनिटी क्या है? वह है अभ्यास। अभ्यास में साधना को लेकर जो लक्ष्य है, वह जीवन की सबसे बड़ी अपॉर्चुनिटी है।

जीवन की अपॉर्चुनिटी

जीवन में बहुत सारी अपॉर्चुनिटी हैं-परिवार, बाल बच्चे, खाना पना, शैर सपाटा, घूमना। लेकिन सबसे बड़ी अपॉर्चुनिटी क्या है? कि इस जीवन में जो ये परम शक्ति है, भगवान कहो, ये अद्वितीय, रहस्यमय, अदृश्य शक्ति, जो डिवाइन और दिव्य है-उसका आप अनुभव कर लो, उसमें आप प्रवेश कर लो। अभी आप कभी खुशी कभी गम की दुनिया में हैं। अब उस दुनिया में प्रवेश हो जाएं जहां अखंड आनंद है, आनंद ही आनंद बरस रहा है, अखंड प्रेम है, सबके प्रति प्रेम है, सद्भावना है।

साधना की स्थिति

ऐसी मन स्थिति में प्रवेश कर लेना अभी आप साधना में चल रहे हैं। सब लोग साधना में चलते हैं, यही भावना करके हम ऐसी स्थिति को पाना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में रहना चाहते हैं। डे टू डे लाइफ में, सुबह उठ गए आनंद में, शांति में, पूरा दिन परम आनंद, परम शांति, और परम कृतज्ञता में जीना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में हम सब रहना चाहते हैं।

माया से पंगा

अभी हमारा पंगा किससे पड़ेगा? माया से पड़ेगा। अभी हमें माया से डील करना पड़ेगा। आज का सेकंड श्लोक पाच लोक का बहुत पावरफुल स्तोत्र है। आज का सेकंड लोक है। मैं पहले श्लोक पढ़ता हूं और फिर उसका क्या कहना चाहते हैं, उसका अभ्यास करेंगे। श्लोक में कहा गया है:

श्रुति सत निगा शोध कान पय धना दिन दर्शने न सज कलुष चतुष्पादा
भिन्ना न घटित घटना घट यसी माया न घटित घटना घटी यसी

माया की अद्भुत शक्ति

माया न घटित जो घटना इंपॉसिबल है, जो असंभव है, ऐसी घटना बन जाती है। माया का ताकत ऐसा है। न घटित न घटित घटना घटी जैसी-माया वह जो हो ही नहीं सकता, वैसी घटना को संभव बना देती है। उदाहरण के तौर पर, आप फ्रीज खोलेंगे, तो आपके दिमाग में रहता है कि अंदर फ्रूट्स, वेजिटेबल्स होंगे। लेकिन अगर आप फ्रीज खोलने पर हाथी निकलता है, तो यह पॉसिबल नहीं है। ऐसे ही, जो घटना इंपॉसिबल है, माया के कारण वह संभव हो जाती है।

वेदांत और माया

श्रुति सत निगा मंत शोध कान-यह शास्त्रों, वेद, उपनिषद, गीता, पुराण के जानकारों का संदर्भ देता है। जो शोधक या रिसर्चर होते हैं, वे वेदांत के ऊपर बहुत बड़ा व्याख्यान देते हैं। वेदांत की मास्टरी होने के बावजूद, धना दिन जैसे धन, पजेशन-पैसा और रिस्पेक्ट मिलते हैं। इन सब चीज़ों के मिलने से, वैसा आदमी एक जानवर जैसा हो जाता है, एनिमल जैसा हो जाता है।

धन और पजेशन की भूमिका

जिन्हें वेदांत की गहरी जानकारी है, उन लोगों को पैसा और पजेशन मिलने के बाद, एक इंपॉसिबल स्थिति में डाल दिया जाता है। धन और पजेशन प्राप्त करने से, वे अलग-अलग मिलते हैं—गाड़ी, बंगला, और पग्रह करने की वृत्ति होती है। यह सब मिल जाने के बाद, वे एक प्रकार से जानवर जैसा व्यवहार करने लगते हैं। माया की यही शक्ति है कि वह असंभव को संभव बना देती है, और इसी कारण व्यक्ति की सच्चाई और समझ भी बदल जाती है। माया का प्रभाव और चेतावनी

संस्कृत और वेदांत के ज्ञाता

है ऐसे आदमी जिनको आप देखते हैं, आप बोलेंगे, "संस्कृत के स्कॉलर हैं, वेदांत के ज्ञाता हैं, वेद के ज्ञाता हैं, उपनिषद के ज्ञाता हैं"। ऐसे आदमी जिनको हम अपनी आंखों में उठाते हैं, रिस्पेक्ट देते हैं, जिनका हम जय जयकार करते हैं, जिनके ज्ञान की चर्चा होती है। लेकिन ऐसे आदमी पैसे, पजेशन और रिस्पेक्ट मिलने के कारण जानवर जैसे हो जाते हैं। चतु चतु स्प चतु पदा मतलब चार चार पैर

पर चलता है ना गधा, घोड़ा वैसे बन जाते हैं। क्या कहना चाहते शंकराचार्य? यह माया का पावर है।

माया का चेतावनी

देखिए, एक तो है ना, यह बहुत इंपॉर्टेंट बात है कि इसमें हमारे लिए एक रेड लाइट भी है। हमारे लिए एक कॉशन भी है। जैसे डॉक्टर डायबिटीज होता है, उनको कहते हैं, "देखो भाई, आप शुगर मत लेना"। उनको पहले वार्निंग देके रखते हैं। वैसे यह मॉल में रहता है, वार्निंग पर यह इलेक्ट्रिक का वायर है, बहुत डेंजर है। जरा संभाल के रहना। वैसे यह माया का ताकत का वार्निंग है।

जीवन की समझ और अनुभव

हमको शंकराचार्य अभी से ही दे रहे हैं, क्या दे रहे हैं? ऐसा क्यों बोल रहे हैं शंकराचार्य? देखिए, हम दो चीजों से हमारे जीवन का एक्शन और अनुभव निकलता है। ध्यान से समझेंगे इसको। आपके जीवन का अनुभव आप सुख में हैं, दुख में हैं, प्रेम में हैं, आनंद में हैं किस मनस्तर से होता है? एक तो आपकी क्या मेमोरी है। मेमोरी में क्या चलता है? आपने क्या सीखा है, आपने क्या पढ़ा है, आपने क्या सुना है? वो

मेमोरी में जो आपने पढ़ा है ना, उससे आप एक्शन लेते हैं। आपने पढ़ लिया, सुन लिया कि भाई मैं अखंड।

आनंद और एक्शन

आनंद हूं तो एक्शन लेंगे। आप आनंद से बात करो, क्योंकि अभी लेक्चर भी सुनते हैं, आत्म बोध भी सुना, आत्म शतकम, माया पंचक, तो अभी इतना अभ्यास किया ना, अपने को अखंड आनंद में रहना है। ये मेमोरी में बात है। मेमोरी से आप अनुभव आता है, कुछ और एक्शन आता है। एक्शन आएगा कि भाई, आप आनंद से सर्वे आनंद से व्यवहार करो। तो बहुत सारी चीजें हम मेमोरी में होती हैं। वेदांत पढ़ते हैं, शास्त्र सुनते हैं, कोई गुरु को सुनते हैं, य पर सुनते हैं। एक मेमोरी में से अनुभव निकलता है और मेमोरी में से आचरण निकलता है।

मेमोरी का अनुभव और आचरण

मेमोरी से अनुभव और आचरण निकलता है। यह जो मेमोरी का अनुभव और आचरण है, ना, एकदम वीक है। इसकी ताकत बहुत कम है। क्यों? जो एनवायरमेंट, दूसरा हमारा अनुभव आचरण निकलता है। एनवायरमेंट में जिस वातावरण में हम रहते हैं। एक एक

आपकी मेमोरी में बात है। मेमोरी में आपको मालूम पड़ा, मेरे को डायबिटीज है। मेरे को गुलाब जामू नहीं खाने, डॉक्टर ने भी बोला। मेमोरी में है, आप घर में अकेले बैठे नहीं खाएंगे।

पर्यावरण की शक्ति

एक बार ट्राई करो मेमोरी क्या बोलती है, नहीं खाओ। एनवायरमेंट क्या बोलता है, खाओ ले लो। ट्राई करो किसका ताकत ज्यादा है? माया पंच कम में कहते एनवायरमेंट का ताकत ज्यादा है। एनवायरमेंट जो है, उसका आप अंडर एस्टीमेट मत करो, इतना पावरफुल है साहब। तुम्हारी मेमोरी भूल जाओगे, मेमोरी चली जाएगी हवा होके। मेमोरी का एक मिनट में जो सूखे पत्ते जैसे चली जाएगी। एनवायरमेंट जो है, वह आपको कंट्रोल कर लेगा। आपने मेमोरी में ऐसे देखा?

शांति का महत्व

मेमोरी में सुनते हैं, गुस्सा नहीं करना चाहिए। गुस्से से ब्लड प्रेशर भी बढ़ता है, हाइपरटेंशन होता है। गुस्से से दूर रहो, शांति परम शांति। सबसे शांति से आनन से बात करो। मेमोरी में है, अभी आप ऑफिस से घर आए और आपने जो बोला था वो नहीं हुआ। आपने बोला था भाई सब्जी बना के रेडी रखना, नहीं हो गई। आपने बोला बीवी को

**बच्चों को रेडी हो जाना, हमको बाहर जाना है, कोई रेडी नहीं हो गया।
ऑफिस में गे स्फ को बोला था, ये करना नहीं हुआ।**

एनवायरमेंट की स्थिति

**अब एनवायरमेंट देखो, अभी मेम सब भूल गए। अभी गुस्सा करेंगे,
अभी जो मेमोरी में था, शांति रखो। शांत परम शांत परम आनंद, वो
सब भूल गए क्यों? क्योंकि एनवायरमेंट क्या बोलता है, गुस्सा करो।
एनवायरमेंट की जो स्टिमुलस है, ना एनवायरमेंट में से जो हमें
स्टिमुलेटिंग भूल जाते। शंकराचार्य क्या एपल देते?**

धन और उसकी शक्ति

**पैसा एक वेल्थ है। धन का मतलब क्या है? आप सभी भोगों को
खरीद सकते हैं। आपको खाना खाना है, अच्छा अच्छा खाना खाना
है, अच्छा अच्छा कपड़ा पहनना है, अच्छा देखना है, अच्छा सुनना है।
इंद्रियों के जो भोग हैं, जो भी आपको चाहिए, पैसे से मिल जाएंगे।
अभी आपके पास पैसा आ गया और रिस्पेक्ट मिलेगा, और
पजेशन मिल गया। सब चीज आपको देखो। सब साधु संतों के जो
बड़े बड़े होते हैं, महंत उनके बड़े बड़े आश्रम होते हैं, लैंड होती है, उनको**

पजेशन मिल गया, मेरी लैंड है, मेरा आश्रम है, मेरा पैसा है, यह सब आपको मिल गया।

मेमोरी बनाम एनवायरमेंट

मेमोरी क्या कहती है? अपरिग्रह। अपने को सब में इवॉल्व नहीं होना है, सबसे दूर रहना है। मेमोरी ऐसा बोलती है। एनवायरमेंट क्या बोलता है? पैसा है, पावर है, पजेशन है, रिस्पेक्ट है, और उसका उपयोग करो। पैसे का उपयोग करो, अच्छा फाइव स्टार फैसिलिटी में रहो, फाइव स्टार आश्रम में रहो, फाइव स्टार गाड़ी में घूमो, फाइव स्टार खाना पीना खाओ।

साधना और संयम

जब साधना में चले थे, वेदांत में क्या बोलता है? संयम, संयम में जियो। अपनी जरूरत को कम करो। यह सब बोलते हैं, साधना में तो यही है। वह मेमोरी में है, लेकिन एनवायरमेंट अभी क्या बोलता है? आपके पास सब है, सब डिवटी रहता है, जो उसको बहुत ऑनर करते हैं, रिस्पेक्ट करते हैं। रिस्पेक्ट का भी यूज करो अपने स्वार्थ के लिए। यह ऐसा हो जाता है, मेमोरी में।

मेमोरी और एनवायरमेंट का प्रभाव

गई भूल गए मेमोरी वेदांत। ईसा वास्य इदम सर्वम यकच जगत जगत।
ये सब उपनिषद गीता सब ज्ञानी ज्ञान भूल गए। क्यों? अभी
एनवायरमेंट कंट्रोल करता है। इसलिए अभी से अपने को वार्निंग
देते हैं। एनवायरमेंट की ताकत को कम मत समझो। एनवायरमेंट
आपके बड़े बड़े जो मेमोरी के जो ज्ञान है, ना उसको हटा देगा और
आपके जीवन का अनुभव फिर मेमोरी से नहीं चलेगा। एनवायरमेंट से
चलेगा। ऐसी माया का ताकत अभी हम लोग देखिए, अभी हमने कर
दिया।

शंकराचार्य की उपदेश

एक सीधी सी बात है, शंकराचार्य ने दो लाइन में कह दिया: ब्रह्म सत्य
जगत मिथ्या। य जो य अद्वित अज्ञात शक्ति है, जो शक्ति हम सब में
है, हम सबको कंट्रोल करती है। हम सब वही शक्ति हैं, शक्ति रूप हैं,
शक्ति का अंश हैं। वह परम शक्ति है, परम आनंद, अखंड आनंद है।
और यह जो दिखता है, यह जो एनवायरमेंट दिखता है, आपको वो
मिथ्या है, इल्यूजन है, भ्रम है। कोई आपकी पत्नी नहीं, कोई पति नहीं,
यह सब भाषा में क्रिएट किया है।

अनंत शक्ति और मिथ्या

सभी कोई गुरु नहीं, कोई चेला नहीं। सभी वो अनंत शक्ति की लहर हैं। सागर में कैसे लहर आती है, वैसे हर जगह वो अनंत शक्ति फैली हुई है। हर जगह, हर वक्त वो अनंत शक्ति अभिव्यक्त हो रही है। पेड़ में, पौधों में, सूरज में वही शक्ति अभिव्यक्त हो रही है। मुझ में, आप में वह शक्ति सत्य है। बाकी सब जो टेंपररी संबंध बनाते हैं, टेंपररी अस्तित्व होता है, वो सब मिथ्या। हमारे शरीर का अस्तित्व मिथ्या है, शरीर तो चला जाएगा एक दिन। शरीर है, एक दिन खत्म हो जाएगा, लेकिन जो शक्ति है, वो रहेगी। अलग-अलग रूपों में अक्त होती जाएगी। जैसे सागर की एक लहर आती है, वो खत्म हो गई, फिर दूसरी आती है। सागर थोड़ी खत्म होता है, वह अनंत। वैसे यह जो अनंत शक्ति है, ऊर्जा है।

शक्ति की प्रकटता

वह अभी आप पर प्रकट हो रही है। आपके भीतर प्रकट हो, आपके शरीर में, मन में, वाणी में प्रकट होती। एक दिन बंद हो जाएगी। हम सब मर जाएंगे, लेकिन वह शक्ति दूसरों में प्रकट होगी। पेड़-पौधे, पशु-पंखी होती रहेगी। वह सत्य शक्ति है, वह शक्ति सत्य है। आपका

जो टेंपररी अस्तित्व है, ना पति, पिता, बिजनेसमैन, रिच, पूअर, एजुकेटेड, ऐसा जो आपका एक छोटा सा क्षणिक अस्तित्व है, ना वो तो खत्म हो जाएगा, वो मिथ्या है। अभी हमने जान लिया।

अखंड आनंद का अनुभव

अखंड आनंद में जियो, हर एक को मिलो। ना हर एक व्यक्ति को मिलो, तो वह परम शक्ति का अखंड आनंद की अभिव्यक्ति है। भगवान का रूप है। इस तरह से मिलो, आनंद से मिलो, प्रेम से मिलो। और जो भी हो रहा है आपके जीवन में, जो भी हो रहा है, वही अखंड आनंद का अखंड शक्ति का प्रसाद है। भगवान के मंदिर में जाते हैं ना, कभी प्रसाद देते हैं। बड़ा मंदिर है तो काजू देंगे, बादाम देंगे। कभी छोटा मंदिर है, कभी पैसा कम है उधर, तो आपको शक्कर देंगे, नारियल देंगे। छोटा सा कोई मंदिर में पूरा खाना देंगे।

प्रसाद की स्वीकृति

जो भी जिनकी जो मंदिर की अलग भगवान का प्रसाद है, आप जो भी प्रसाद देंगे, आप क्या बोलेंगे? "देदी, ले लेंगे", नमस्कार करके भगवान का प्रसाद। ये नहीं देखेंगे प्रसाद में क्या है। है जो है, प्रसाद दे दो, तो भगवान का प्रसाद है। वैसे आपके जीवन में जो भी परिस्थिति है, ना वो

भी भगवान का प्रसाद है। भगवान ने ऐसे दे दिया, आज शक्कर दे दिया।

परिस्थितियों का स्वीकार और प्रभाव

आज ली नारियल दे दिया। आप बोलेंगे, "य भगवान ने मेरे को कैसा परिस्थिति दिया"। नहीं, ऐसी भगवान की इच्छा स्वीकार कर लिया। तो यह इतनी बात है, यह हमारी मेमोरी में आ जाएगी। एक मिनट में आ जाएगी, सबको मालूम है। अभी देखो, एनवायरमेंट जब एक्चुअल जीने की बात आएगी, जब जिंदगी जीते हैं डे टू डे लाइफ, एनवायरमेंट बदलता है। पिक्चर देखने जाते हैं ना, स्क्रीन के ऊपर फिक्स नहीं है। व पर्दा बदलता है, पर्दा सेम है, लेकिन उसके ऊपर पिक्चर बदलता रहता है। ऐसे आपके एनवायरमेंट बदलते रहेंगे।

एनवायरमेंट के बदलाव

पूरा एनवायरमेंट बदलेगा, लोग बदलेंगे। बच्चा छोटा है आपका, सब बात सुनेगा, बड़ा है अभी नहीं सुनेगा। लोग बदल जाएंगे, आप आप बदल जाएंगे। गवर्नमेंट बदल जाएगी, इंफ्रास्ट्रक्चर बदल जाएगा, सिटी बदल जाएगा, शहर बदल जाएगा। एनवायरमेंट बदलता

जाएगा। अभी इस एनवायरमेंट का आपके ऊपर असर होगा, और आपका फिर ज्ञान है ना वो काम नहीं आएगा। आप एनवायरमेंट को रिएक्ट करते जाएंगे और फिर हम व एनवायरमेंट की ताकत के अंदर पशु जैसे हो जाते हैं। एनवायरमेंट हमको खींचता है।

सत्संग का महत्व

इसलिए आप किससे संबंध रखते हैं, ना उससे आपके जीवन का क्वालिटी डिसाइड होगा। फिर से कहता हूं, आपके मेमोरी में क्या है ना उससे जीवन का क्वालिटी डिसाइड नहीं होगा। किससे आप संबंध रखते हैं, इसलिए हमने सत्संग को बहुत महत्व दिया। सत्संग को हमने सबसे सत पुरुषों का, जिन लोग सत्य की रास्ते पर चल रहे हैं, उनसे संग रखो। वह एनवायरमेंट में जियो।

एनवायरमेंट का महत्व

उनके पास जाओ, उनके पास बैठो, उनकी सुनो। अपने आप को आपको उठाकर उस एनवायरमेंट में रखना पड़ेगा। आप मेमोरी में क्या रखते हैं, ना उससे जीवन का फर्क पड़ेगा। लेकिन आप खुद को कौन से एनवायरमेंट में रखते हैं, उससे जीवन का बहुत बड़ा अंतर पड़ेगा। आप जीवन का अनुभव और जीवन की आचरण उस

एनवायरमेंट से आपको मिलेगा। एनवायरमेंट का मतलब ऐसा नहीं है कि आप इंडिया से अमेरिका आ जाओ। एनवायरमेंट का मतलब यह है कि आप किस चीज को मूल्य देते हैं, किस व्यक्ति को मूल्य देते हैं, उस व्यक्ति की किस बात को मूल्य देते हैं।

पैसा और समाज का योगदान

आपके पास पैसा आ गया, पैसे की ताकत बहुत है। पैसे से सब भोग मिल सकता है, जो चाहिए मिल सकता है। और पैसे से कुछ कंट्रीब्यूट भी कर सकते हैं। पैसे से बहुत भलाई का काम भी कर सकते हैं। अभी आपकी नजर क्या है? आप किसको इंपॉर्टेंस देते हैं? मेरे को पैसा मिल गया ना, अभी बस मौज करो। आपके हाथ में मेमोरी गई, फिर या तो आपने एक ऐसा एनवायरमेंट बनाया कि मेरे पास पैसा है, ना मैं इस चीज को इंपॉर्टेंस देता हूं।

सकारात्मक एनवायरमेंट बनाना

ऐसे लोगों को मिलो जो कुछ काम करते हैं समाज के लिए, लोगों के लिए, कल्चर के लिए। ऐसी संस्थाओं में गए, आप अपने आप को उससे जोड़ दिया। उसको इंपॉर्टेंस दिया, चैरिटेबल, सोशल वोलंटिरीज्म। तो एनवायरमेंट पर ध्यान दो। माया जो है, वह आपके

एनवायरमेंट से आपको कंट्रोल करती है। आपका माया जो है ना, वह आप कॉन्शियस नहीं हैं, अवेयर नहीं हैं, मैं कौन से एनवायरमेंट में हूं।

सकारात्मक एनवायरमेंट में रहना

मैं जा रहा हूं, आप बहुत जाओ सोशल एनवायरमेंट में जाओ। हां, पर लोग बहुत दारू पीते हैं, सिगारेट पीते हैं, बहुत ऐसा अनहेल्दी खाते हैं। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों। और आप उनको बहुत इंपॉर्टेंस देते हैं। अभी एक मेरे रिलेटिव है, बहुत अनहेल्दी खाते हैं और उनका तबीयत भी बहुत खराब रहता है। और जब भी मेरे को मिलेंगे ना, अरे यह कांदीवली में यह चीज, यह जगह पे, यह फलाना रेस्टोरेंट में, यह अन्ना का डोसा, यह ऐसा वैसा। मैं बोलता, आप मत पूछ, बात करो। भाई, मैं तो यह सलाह देता हूं, आप भी मत खाइए।

एनवायरमेंट का प्रभाव

बोले, आपको कुछ इंटरेस्ट ही नहीं है, मेरे को इंटरेस्ट है। ना देखो, माया पंच कम में इंटरेस्ट है, माया पंच कम की बात करो, मैं करता हूं। लेकिन आप किस एनवायरमेंट में जाएंगे, उसका आप पर बहुत असर है। अभी मैं था इंडिया में, आठ शादी अटेंड किया। मैंने आठ शादी अटेंड किया, ना तो ये एनवायरमेंट ही वैसा है। शादी का यह

खाओ, वो खाओ, खाना ही पड़ेगा। नहीं खाएंगे तो बुरा लगेगा, फिर मेमोरी चली जाती है।

एनवायरमेंट का संरक्षण

इसलिए जो लोग आप जो भी रास्ते पर चलना चाहते हैं, ना उस एनवायरमेंट को **प्रोटेक्ट** करें। उस एनवायरमेंट को **वैल्यू** दे, उस एनवायरमेंट को **एंपावर** करें, उस एनवायरमेंट को **रिस्पेक्ट** करें। जो रास्ते पर चलना चाहते हैं, अगर **योगा करना चाहते हैं**, तो योगा का जो ग्रुप है, उसको **सपोर्ट** करें, **इनकरेज** करें, **प्रमोट** करें। जो एनवायरमेंट को आप बचाना चाहते हैं, उस एनवायरमेंट के ऊपर ध्यान दे। क्योंकि वो एनवायरमेंट आपको **पोषण** देता है, वो एनवायरमेंट आपको ताकत देता है। तो आपको उस एनवायरमेंट को भी ताकत देनी पड़ेगी। वह एनवायरमेंट आपको **एंपावर** करता है।

एनवायरमेंट का महत्व

वेदांत विदान सब मालूम है, नॉलेज है और पैसा आ गया। और भोग के एनवायरमेंट में जीते, भोग, मौज-मजा, 24 घंटा यही क्या खाऊ, क्या खाऊ, क्या खाऊ। तो पैसे का वही उपयोग करेंगे। अगर हमारे जीवन में हम **अखंडानंद** चाहते हैं, **अखंडानंद** का अनुभव चाहते हैं और

अखंडानंद के रूप, आचरण चाहते हैं, अभिव्यक्ति चाहते हैं कि हमारे अभिव्यक्ति में आनंद हो, प्रेम हो, शांति हो, तो हमें हमारे एनवायरमेंट को ध्यान देना पड़ेगा। जैसे मैं, मेरी एक बात कहूं, मेरा पूरा जो डेली का काम है, लोगों से मिलना है, वो मेरा बिजनेस है। काम के कारण मिलता हूं सबको। सुबह से शाम ट्रेड शो में जाते हैं, कंफरेंस में जाते हैं।

अखंडानंद की अभिव्यक्ति

तो यह जो बात है, अखंडानंद की अभिव्यक्ति करने का मौका नहीं मिलता है। लेकिन आप मुझे मौका देते हैं। तो अभी हमने ऐसे एक एनवायरमेंट बना दिया, सैटरडे को करेंगे। आपकी मौजूदगी मुझे तो बड़ा इंटरेस्ट है, मेरा पैशन भी है। लेकिन आपकी मौजूदगी, आपका इंटरेस्ट, आपका प्रोत्साहन, आपके आशीर्वाद से यह संभव हो पाता है कि मैं माया पंच कम के अभ्यास को अभिव्यक्त करूं। अगर यह व्यवस्था नहीं है मेरे जीवन में, व्यवस्था नहीं है, रम बोधि नहीं करते, चलो जाने दो, तो यह अभिव्यक्ति कैसे होगी?

सकारात्मक एनवायरमेंट का निर्माण

आप सब एक ग्रुप बना दीजिए। बोला, अभी माया पंच कम का अभ्यास करना है। चलो सब लोग मिलो, आठ-दस लोगों को जमा

करो। जैसे बार-बार हम होली के लिए जमा होते हैं, खाना पीने के लिए जमा होते हैं। वो आज हमारा अभ्यास है, चलो सब लोग आओ। हम लोग नया श्लोक माया के ऊपर करेंगे। मेमोरी में पावर ज्यादा है या एनवायरमेंट में पावर ज्यादा है, हमारा आचरण और अनुभव मेमोरी से निकलेगा या एनवायरमेंट से निकलेगा।

मेमोरी और एनवायरमेंट का प्रभाव

अगर आप सोचते हैं मेमोरी से निकलेगा, तो आप सब शास्त्र पढ़ते रहो, जितना शास्त्र पढ़ते रहो, पढ़ते रहो, पढ़ते रहो, कुछ फायदा नहीं होगा, कम होगा। क्योंकि हमको लगता है कि हमारा आचरण और अनुभव मेमोरी से निकलेगा, तो हमारा पूरा ध्यान मेमोरी पर जाएगा। लेकिन जब आपने यह महसूस किया कि आचरण और अनुभव एनवायरमेंट से निकलता है, तो फिर आप एनवायरमेंट पर ध्यान देंगे। मैं किसको मिलता हूं, कहां जाता हूं, किसको इंपॉर्टेंस देता हूं। और मुझे जो अभिव्यक्त करना है, उसका एनवायरमेंट है या नहीं है। नहीं है तो बनाओ। अगर आपको इच्छा है अखंडानंद की अभिव्यक्ति करनी है, तो एनवायरमेंट नहीं है तो बनाओ।

एनवायरमेंट का निर्माण और चयन

चार-पांच लोगों को ऐसे दुनिया में है ना, सब चीज के लिए एनवायरमेंट मिल जाता है। मौज-मजा करनी है, झगड़ा करना है, तो भी एनवायरमेंट मिल जाएगा। अनहेल्दी बनना है, हेल्थ खराब करनी है, तो भी एनवायरमेंट मिलेगा। अखंडानंद में रहना है, प्रेम में रहना है, भक्ति में रहना है, दिव्य अनुभव में रहना है, दिव्यता में रहना है, तो भी एनवायरमेंट मिल जाएगा। आपको सिलेक्ट करना है, आपको क्रिएट करना है।

एनवायरमेंट का प्रभाव और उदाहरण

तो आप एनवायरमेंट बनाते हैं पहले, फिर एनवायरमेंट आपको बनाता है। आप पहले दोस्त बनाते हैं, फिर दोस्त आपको बनाते हैं। तो जो वातावरण वैसा ही होता है, केवल इतना ही नहीं। आप दोस्तों का रिलेशनशिप का एनवायरमेंट घर में क्या रखते हैं। आप समझो, आपको इच्छा है कि मेरे को हेल्दी जीना है और घर में आप गाठिया रखेंगे, पापड़ी रखेंगे, यह एनवायरमेंट आपको खींचता है। जो भी चीज आपकी पजेशन है, वह आपको आचरण के लिए मजबूर करती है।

व्यक्तिगत अनुभव से सीखें

मैं अभी इंडिया आ रहा था, मेरे घर का टीवी चल नहीं रहा था, कुछ प्रॉब्लम था। तो हमने टीवी देखा ही नहीं। कभी-कभी कुछ नहीं। य ऐसे भी नहीं देखते, लेकिन वहां पर जीरो हो गया। अभी यहां पर आए, टीवी चालू है। बच्चों ने भी टीवी नहीं देखा। टफ नहीं, कुछ नहीं। यहां पर आ गए, टीवी चालू है। तो टीवी भी एक एनवायरमेंट है हमारा। मैं जब छोटा था और बड़ा हो रहा था, मेरे पिताजी ने एक रूल बनाया, घर में केबल नहीं। टीवी था, दूरदर्शन वाला, केबल नहीं। बहुत सालों तक मुझे जब वर्ल्ड कप का मैच वगैरा देखना होता, क्रिकेट, बाजू वाले के घर में जाता।

स्मार्ट टेक्नोलॉजी का उपयोग

कभी हमने केबल लिया ही नहीं। अभी तो यहां पर इंटरनेट के साथ फ्री है हमारे घर में। लेकिन केबल, जो केबल टीवी नहीं लिया। क्योंकि वो

मोबाइल आपका एक एनवायरमेंट है। कितना भी मेमोरी में है, टाइम वेस्ट मत करो, जीवन का सदुपयोग करो, ध्यान करो। मोबाइल हाथ में आ गया, तो हाथ में आ गया, खत्म। आपका एनवायरमेंट आपको आचरण के लिए मजबूर करता है।

नया एनवायरमेंट बनाएं

और अभी होली भी आ रही है। होली में यह सब हमारे जो एनवायरमेंट का कचरा है, उसको जला देंगे। एक नया एनवायरमेंट बनाएंगे, क्रिएट करेंगे, वह एनवायरमेंट जहां आपके भीतर का परम आनंद अभिव्यक्त हो जाए। ऐसे लोगों से मिलेंगे, ऐसी प्रवृत्ति में इवॉल्व हो जाएंगे। जैसे, जैसे मैं कहूं, मैं आपका बहुत शुक्रगुजार हूं, हमेशा बोलता हूं।

माया पंच कम का अभ्यास

क्योंकि आप पूरा वीक मैं सोचते रहता हूं कि यह माया पंच कम का यह श्लोक है, तो कैसे हमारे प्रैक्टिकल लाइफ में उसका उपयोग होगा, कैसे मैं बात करूं, उसका हमारे जीवन में रेलीवेंस क्या है, मेरे जीवन में

कैसे रेलीवेंस है। तो ये 45 मिनट का हमारा सेशन रहता है, लेकिन पूरा एक वीक मेरे दिमाग में यह बातें चलती रहती हैं। तो यह एनवायरमेंट जो है, वह मुझे एक अनुभव देता है और मुझे एक आचरण देता है।

आपकी मौजूदगी का महत्व

आपकी मौजूदगी से यह संभव होता है। आप सबका बहुत-बहुत फिर से धन्यवाद करता हूं। नेक्स्ट वीक में हम लोग माया पंच कम का थर्ड श्लोक देखेंगे। आज हमने धन के ऊपर और पजेशन के ऊपर देखा और अभी नेक्स्ट जो है, वह देखेंगे।

शंकराचार्य की चेतावनी

यह एनवायरमेंट हमें शंकराचार्य की चेतावनी याद दिलाता है कि माया कितनी शक्तिशाली है। हम चाहे कितने भी ज्ञानी क्यों न हों, अगर हमारे एनवायरमेंट में संतुलन नहीं है, तो हम अपनी साधना से चूक सकते हैं। इसीलिए, हमारे लिए यह जरूरी है कि हम अपने एनवायरमेंट को सकारात्मक और उन्नतिशील बनाए रखें।

अखंडानंद की अभिव्यक्ति

तो यह जो बात है, अखंडानंद की अभिव्यक्ति करने का मौका नहीं मिलता है। लेकिन आप मुझे मौका देते हैं। तो अभी हमने ऐसे एक एनवायरमेंट बना दिया, सैटरडे को करेंगे। आपकी मौजूदगी मुझे तो बड़ा इंटरेस्ट है, मेरा पैशन भी है। लेकिन आपकी मौजूदगी, आपका इंटरेस्ट, आपका प्रोत्साहन, आपके आशीर्वाद से यह संभव हो पाता है कि मैं माया पंच कम के अभ्यास को अभिव्यक्त करूं। अगर यह व्यवस्था नहीं है मेरे जीवन में, व्यवस्था नहीं है, रम बोधि नहीं करते, चलो जाने दो, तो यह अभिव्यक्ति कैसे होगी?

आचरण और वातावरण

मैं आ गया ट हाथ में आ गया खत्म आपका एनवायरमेंट आपको आचरण के लिए खींच लेता है। आपका वातावरण आपके पास क्या चीज है, आपके ट है, वो ट आपका आचरण खींचता है। मेमोरी नहीं खींचती। भगवान का नाम लो, स्मरण करो, ध्यान करो। मेमरी में एनवायरमेंट क्या यह ताकत है माया की।

माया का प्रभाव और शंकराचार्य की सलाह

तो शंकराचार्य हमको कहते हैं कि असंभव संभव हो जाता है। बड़े बड़े ज्ञानी हार जाते हैं, बड़े बड़े ज्ञानी हार जाते हैं अपने साधना के रस्ते से चूक जाते हैं। अखंडानंद से चूक जाते हैं। इतना पावर है माया का तो यह वार्निंग हमको दे दी।

शंकराचार्य को नमस्कार करेंगे और अभी होली भी आ रही है। होली में यह सब हमारे जो ज एनवायरमेंट का कचरा है, उसको जला देंगे। एक नया एनवायरमेंट बनाएंगे, क्रिएट करेंगे। वह एनवायरमेंट जहां आपके भीतर का परम आनंद अभिव्यक्त हो जाए।

अखंडानंद का अनुभव

आपकी मौजूदगी और आपका समर्थन मुझे यह प्रेरणा देता है कि मैं माया पंच कम के अभ्यास को जीवन में लागू करूं। आपका प्रोत्साहन और आशीर्वाद मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आप सबका धन्यवाद, और नेक्स्ट वीक में हम माया पंच कम का थर्ड श्लोक देखेंगे।

सुख-दुख का ज्ञान

हम थर्ड सेशन थर्ड लोक पर जाएंगे जो सुख-दुख के ऊपर है। सुख और दुख का ज्ञान उसके ऊपर तो आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद।

माया पंचकम सत्र -3

स्वागत और प्रेरणा

माया पंचकम के तीसरे श्लोक के इस अद्भुत अभ्यास में आपका बहुत आदर पूर्वक स्वागत है। यह तीन श्लोक या पांच श्लोकों का स्तोत्र है। हर एक श्लोक के चार लाइन हैं। चौथा लाइन हर एक श्लोक में क्या है, वो पहले पढ़ता हूं, ऐसा बोलते हैं शंकराचार्य।

माया की परिभाषा और प्रभाव

त्व घटित घटना पटी यसी माया, त्व घटित घटना पटी यसी माया।
माया एक ऐसी चीज है, ऐसा जादू है कि जो घटना असंभव है, वो संभव हो जाती है। शंकराचार्य को इस दुनिया में ऐसा दिखता है कि जो असंभव चीज है, वो संभव हो गई माया के कारण।

रोजमर्रा की जिंदगी और माया का चमत्कार

अभी हम भी सुबह से जिंदगी जीते हैं, 50, 60, 70, 80 साल हो गए। हमको ऐसा कुछ दिखता है क्या? यह तो इंपॉसिबल है, यह कैसे पॉसिबल हो गया? हम तो जिंदगी जीते हैं, सुबह उठते हैं, खाना खाते हैं, काम पर जाते हैं, शाम परिवार के साथ बातें करते हैं, लोगों से बातें करते हैं, शाम का खाना खाते सो जाते।

असंभव घटनाओं का अनुभव

कभी आपने यह सोचा कि यहां पर कोई असंभव चीज हो रही है? इस दुनिया में ऐसा आपको कभी विचार आया? कुछ जादू हो रहा है ऐसा अनुभव होता है? सुबह उठके कमाल का जादू है? या असंभव चीज हो रही है ऐसा हमको कुछ नहीं होता है।

माया का रहस्य और जादू का अनुभव

शंकराचार्य को हुआ क्या हुआ? तो घटित घटना पटी ऐसी माया। यह माया एक ऐसी चीज है कि जिससे असंभव चीज संभव हो जाती है। यह जादू है। अभी आपको अगर कुछ जादू लग ही नहीं रहा तो आप माया को समझने जाएंगे ही नहीं।

जादू का अनुभव और उत्सुकता

आप कभी जादूगर का जादू देखने गए? स्टेज पर वो कुछ कर रहा है। टोपी खाली निकालेगा, उसमें से कबूतर आएगा। आपको लगा कुछ जादू नहीं है, तो आपको कुछ सरप्राइज नहीं है, कुछ क्यूरियोसिटी नहीं है, तो आप कुछ मेहनत नहीं करेंगे ना?

माया की समझ

लेकिन जिस व्यक्ति को लगा ये रियली जादू है, कमाल है, मेरे नजर के सामने दिखता है।

जादू का अनुभव और उसकी चाह

खाली खाली कैप है, हैट है, उसमें से कबूतर निकाला। कैसे निकाला? मुझे देखना है, मुझे समझना है। जब आपके भीतर यह इच्छा प्रकट हो गई, पहला तो आपने ये महसूस किया कि कुछ जादू हो रहा है। अगर आपको ये जादू का मिस्ट्री का सस्पेंस का अनुभव नहीं है, तो आप आगे पढ़ेंगे ही नहीं, अभ्यास ही नहीं करेंगे। क्यों करना है? सब मालूम है मेरे को।

जीवन का सबसे बड़ा रहस्य

लोग काफी सारे लोग सस्पेंस पिक्चर देखते हैं, थ्रिलिंग पिक्चर, मिस्ट्री पिक्चर, व एक्साइटमेंट आता है। क्या सस्पेंस है? क्या क्या होगा? ऐसी कहानियां भी बहुत लोगों को अच्छी लगती है। लेकिन सबसे बड़ा जादू, सबसे बड़ा सस्पेंस, सबसे बड़ी मिस्ट्री, सबसे बड़ा रहस्य, हमारा खुद का जीवन है। यह पूरा अस्तित्व है। व घटित घटना पटी यसी माया। और यह जो जादू, पहले तो जादू का अनुभव करो।

आध्यात्मिक शुरुआत और आत्मज्ञान

आध्यात्म की शुरुआत, अखंडानंद की शुरुआत, जादू के अनुभव से होती है। अगर आपको जादू का अनुभव नहीं है, कुछ रहस्यमय हो रहा है, अनुभव नहीं है, तो आप फिर ये अभ्यास आपके काम का नहीं है। तो घट, तो घट, घटना पटी जैसी माया। आपको यह रियली महसूस हुआ कि कुछ तो भी जादू है, असंभव संभव हो रहा है।

क्या असंभव संभव? शंकराचार्य को दिखता है, हमको कुछ इंपॉसिबल दिखता नहीं। उनको क्या इंपॉसिबल दिखा? तो ये शलोक में क्या बोलते हैं शंकराचार्य?

शुद्ध स्वरूप और अद्वितीयता

तीसरे शलोक में, सुख खंड विबो मति अदित यदन लाद विनिर्मित निज ब्रम भ भव सागरे नितांत व, क्या बोलते हैं? आप जो सुन रहे हैं यह बात, अभी इस वक्त, आप परम आनंद स्वरूप चैतन्य हैं, जो अद्वैत है, जिसके कोई पार्ट नहीं हो सकते। आप परम आनंद स्वरूप चैतन्य स्वरूप हैं। आपके कोई टुकड़े नहीं हो सकते, आप एक हैं, अद्वितीय हैं, महान हैं। ऐसे आप, ऐसे आपका शुद्ध स्वरूप। वैसे आप अभी असंभव क्या है? वैसे आप भटक रहे, इधर उधर भटक रहे हैं।

भव सागर में भटकना

आप भटक रहे, इधर उधर भटक रहे हैं। आप भव सागर में, भव सागर का मतलब क्या होता है? मुझे यह चाहिए, मुझे वो चाहिए। संसार बहु सागर, बहु मतलब बनना। मुझे य बनना है, मुझे यह चाहिए, मुझे यह चाहिए, मुझे यह चाहिए।

मुझे चाहिए य बहु सागर में आप भटक रहे। जिसके पास सब कुछ है, आपके पास सब कुछ है। आप परम आनंद स्वरूप चैतन्य हैं। आपको कुछ नहीं चाहिए, आप परिपूर्ण हैं, तृप्त हैं।

शरीर, मन, बुद्धि, परिवार, पैसा, उस सबसे आप ऊपर। आपका शुद्ध स्वरूप, परम आनंद, परम चैतन्य। और वैसे आप भटक रहे हैं, इधर उधर, इधर उधर भटक रहे हैं।

यादें और जीवन की कहानी

मुझे यह श्लोक का प्रियेयर कर रहा था, ना मुझे एक बात याद आ गई। मैं छोटा था, ना, तभी ऐसे मूवी आते थे। एक बहुत बड़े सेठ होए, वो गाड़ी में कहीं जाएंगे, उनके दो बच्चे होंगे। फिर गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया, दोनों बच्चे चले गए, गुम हो गए।

ट्रेन में बैठ गए, एक दूसरी ट्रेन में, दूसरा दूसरी ट्रेन में। फिर दोनों बच्चे अलग हो गए। फिर एक बच्चा मिलता है पुलिस को, पुलिस के घर में उसको वो शरण मिलती है। एक बच्चे को गुंडे लोग के घर में जाता है।

फिर 20-22 साल हो जाते, दोनों बच्चे बड़े होते हैं। जो गुंडों के साथ है, वो गुंडा बन जाता है। जो पुलिस के साथ है, वो बड़ा इंस्पेक्टर बन जाता है। ऐसा कहानी पिक्चर में बहुत अच्छा दिखाता है।

असली पहचान और भुला हुआ सत्य

फिर दोनों भूल गए, ना, उनको थोड़ी थोड़ी मेमोरी याद रहती। कोई कोई गाना याद रहता है कि हम लोग थे, पहले पिताजी थे, दो भाई थे। लेकिन बाकी सब भूल गए, वो गुंडा गुंडा बन गया, पुलिस पुलिस बन गया।

ऐसी हमारी स्थिति है, ऐसी हमारी स्थिति है। ये असंभव है, य असंभव संभव हो गया कि आप भूल गए आप कौन हैं।

आप परम चैतन्य, परम आनंद स्वरूप, अद्वितीय, अद्वैत। इसके टुकड़े नहीं हो सकते। ऐसे होल एंड कंप्लीट हैं। अब भूल गए, आप भूल गए आप कौन हैं।

इतना ही नहीं, आप जिनके संग में हो गए, जिन लोगों के साथ आप मिल गए।

दुख और जीवन की हकीकत

आपने रंग पकड़ लिया जैसा संग वैसा रंग। जिसके साथ आप एसोसिएट हो गए वैसे आप बन गए। अभी एसोसिएट किसके साथ हो गए? शरीर के साथ। हमारे जीवन में दुख है, यह हकीकत है। सबके

जीवन में दुख है। दुख आता है, उसको झुठला नहीं सकते। आप बीमार हो जाएंगे, आपके परिवार के लोग बीमार होंगे। कभी पैसा का प्रॉब्लम आएगा। कभी आप जिन परिवार के पीछे पूरा जीवन दे दिया, वो लोग आपको अप्रिशिएट नहीं करेंगे, धोखा देंगे।

धोखा होता है। आप जिनको बहुत केयर करते हो, वो आपको केयर नहीं करेंगे। आप उनको बहुत मान देते हो, वो आपको मान नहीं देंगे, रिजेक्ट करेंगे। ऐसा होता है। करियर में आपको प्रोग्रेस नहीं मिलेगा। किसी चीज के पीछे पड़ गए, मुझे चाहिए, चाहिए, नहीं मिलेगा। उतना ही नहीं, आपको नहीं मिलेगा, दूसरों को आसानी से मिल जाएगा। कोई आदमी बेचारा पूरी जिंदगी मेहनत करता है, उसको पैसा नहीं मिलता। दूसरों को लॉटरी में पैसा मिल जाता है।

ऐसा चीज होगा, सबके जीवन में होगा। हेल्थ में चैलेंज, फैमिली में चैलेंज, फाइनेंस में, करियर में सब में कुछ ना कुछ गड़बड़ है, थी है और होगी। जब हमारे जीवन में दुख आता है, और फिर हम दुखी हो जाते हैं, अपसेट हो जाते हैं, एंग्री हो जाते हैं, इर्रिटेड हो जाते हैं। जब हमारे जीवन में दुख आता है, तो हम कारण ढूंढते हैं। क्या है कारण? मेरे जीवन में दुख क्यों है?

शंकराचार्य की दृष्टि में दुख का कारण

शंकराचार्य ने एक ही कारण बोला इस श्लोक में। आपने किसका संग बनाया, किसके साथ आप जुड़ गए, एसोसिएट हो गए? जिनके साथ आप एसोसिएट हो गए ना, वो आपको पूरा जीवन का अनुभव देता है। अभी आप किसके साथ एसोसिएट हो गए हैं? शरीर के साथ। शरीर के साथ का एसोसिएशन जो है, वह मूलभूत कारण है। इसके लिए आप संसार में भटक रहे हैं, इधर से उधर, इधर से उधर।

एसोसिएशन का प्रभाव और माया का जादू

कैसे बनता है एसोसिएशन? एसोसिएशन मतलब जुड़ गए किसी चीज से। आप जुड़ते कैसे? इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है। हमारे इंडियन कल्चर में शादी होती है। एक लड़की है, जो अपने पिताजी, माताजी, भाई, बहन, काका, मामा सबसे जुड़ी हुई है। अपने घर से उसे लगता है, ये सब मेरा है, जुड़ी हुई है। सोचती है, पिताजी मेरे हैं, माताजी मेरी है, भाई मेरा है, बहन मेरी है, ये सब मेरा है, सब मेरा है।

फिर शादी हो गई। शादी के पहले तो वह आदमी को जानते नहीं थे, लड़के को जानते नहीं थे। कौन है लड़का, उनके मां-बाप को नहीं जानते थे, चाचा को नहीं जानते, कुछ नहीं जानते। अब शादी हो गई, अब वो क्या करते हैं? भारत में शादी के बाद लड़की क्या बोलती है? वो जो हस्बैंड के चाचा बोलते, वो मेरे चाचा है। ऐसा सोचती है, मेरे चाचा हैं। हस्बैंड का भाई, वो मेरा भाई है और पूरे तरीके से वो लड़की एसोसिएट हो जाती है हस्बैंड के फैमिली के साथ।

असोसिएशन की शक्ति

कैसे होता है एसोसिएशन? किसी भी चीज के साथ आपका एसोसिएशन कैसे होता है? यह समझने जैसी बात है। शंकराचार्य कहते हैं, यह माया का जादू है। माया का पूरा जादू इसी एसोसिएशन में है।

ना माया का पूरा जादू चलता है

आप एसोसिएट हो गए उसके कारण, इसलिए तो आप चैतन्य हैं, परम शक्ति रूप परम आनंद रूप हैं। यह भव सागर में इधर उधर पागल के जैसे भटक रहे हैं। तो यह असोसिएशन कैसे बनता है?

क्योंकि आपको कोई शादी हो गई, शादी होती है, वो लगाते हैं, क्या बोलते हैं शादी में पन? वो लगाते हस्बैंड वाइफ को और फेरा करते हैं। जो गाठ लगाते हैं, व क्या गाठ पा मिनट फिर तो निकाल देते हैं। फेरा कर घुमाते छोड़ दिया। फिजिकली तो आपको कोई पकड़ा नहीं है, ना फिजिकली साथ में जोड़ के किसी को पकड़ा है।

कैसे बनते हैं आप?

बनते कैसे हैं आप लोगों से जुड़ते कैसे हैं एसोसिएट? कैसे होते हैं फिजिकल नहीं है लैंग्वेज से बोल के आप बोलते हैं। क्या बोलते हैं कि किसी भी चीज से एसोसिएट होना है? ना तो उसका यह नियम है क्या बोलते आप? यह मेरा है। जिस क्षण आप बोलेंगे, "मेरा है," तो आप उससे जुड़ गए। इस लैंग्वेज में होता है बोलने का बात है, "आप बोलेंगे, परिवार मेरा है," तो आपका हो गया।

असली पहचान और भुला हुआ सत्य

शादी के बाद भारत में लड़की बोलती है, "यह परिवार मतलब ससुराल मेरा है," बोला जिस शरण बोला, "मेरा है," तो आपका हो गया। आपकी मर्जी आप जिसको बोलेंगे, "मेरा है," व आपका हो गया। लोग

बोलते हैं, "ये फलाने गुरु मेरे य गुरु मेरे तो हो गया।" आपके हाथ में एक अद्भुत पावर है। यह जादू है। आप बोलते, "य मेरा है," जिस क्षण आप बोलते हैं, ना, "यह मेरा," उस क्षण एक नई दुनिया चालू हो जाती है। एक नया संसार खड़ा हो जाता है, एक नया अनुभव कट न आपको एक्शन दिखते क्योंकि आपने बोला, "य मेरा है," एक घर है, आप घर में रहते हैं।

आइडेंटिफिकेशन: इतना हम लोग आप

देखो, नरेंद्र मोदी ने जब वो नोटबंदी की, काफी सारे लोग मर गए हार्ट अटैक से. क्यों बो पैसा ही मैं हूं, मेरा पैसा गया, मैं गया? इतना गहराई से हम एकरूप हो जाते, एकरूप हो जाते.

आप देखो, भारत में ससुराल में जाती है औरत, लड़की ससुराल वाले कुछ रिस्पेक्ट नहीं देंगे, कुछ उसका इंसल्ट करेंगे. उसके प क्यों वो बोलती है, "मेरा है यह परिवार, मेरा है"?

जिस क्षण उसने बोला, ना, "यह मेरा है", सब मुसीबत आपके सर पर आ गई. आप किसको "मेरा" कहेंगे? इससे आपकी जीवन चलने वाला है. अभी आपने बोल दिया, "शरीर मेरा है".

जिस क्षण आपने "शरीर मेरा है" बोला ना, या "मैं हूं" बोला ना, उस क्षण से आपकी जीवन में कभी खुशी, कभी गम चालू हो गया. अभी तो पहले क्या है, आपको यह महसूस करना है कि शरीर को मैंने बोला है.

"शरीर को मालूम है, कि व तुम्हारा है. आप घर में रहते, घर को मालूम है, तुम्हारा घर है. किसी को कुछ मालूम नहीं है, घर बेचेंगे तो दूसरे का हो गया."

आदमी और महिला: एक नया संसार

आप सोचते हैं, आप बोलते, "यह मेरा है." तो शरीर को, आप जब कहते ना, "यह मेरा है", यह मैं हूं, तो एक नया संसार खड़ा हो जाता है.

जैसे एक लड़की शादी करती है और एक आदमी को बोलती है, "यह मेरा पति है," तो एक नया संसार चालू हो जाता है. फिर वो एक नया संसार, नई जिम्मेदारी, नई अपॉर्चुनिटी भी चालू होते, नहीं इंज़ट भी चालू होते हैं.

कभी खुशी, कभी गम का एक संसार चालू हो जाता है. वैसे, जब आप कहते, "यह शरीर मेरा है," तो एक नया संसार चालू होता. क्या होता है?

जैसे शरीर पहले बोला ना, "ये मेरा है, यह मैं हूं," यह जब आपने बोला ना, तो आपको फिर उसकी हिफाजत करनी पड़ेगी.

शरीर की सच्चाई: अपनी पहचान समझें

उसका ध्यान रखना पड़ेगा, खाने का, पीने का, बीमारी का, डॉक्टर का बहुत केयर करनी पड़ेगी. और यह शरीर कैसे दिखता है, क्योंकि अगर आपने सोचा, "यह शरीर मेरा नहीं है, मैं नहीं हूं," तो लोग बोलेंगे, "आप पतले तो पतले, मोटे तो मोटे, लोग तो शरीर पर बहुत कमेंट देते हैं."

भारत में भी तो बहुत है, शरीर के पर बहुत कमेंट आती है. तो आप फिर बहु सागर में फस जाते हैं, व क्या बोलते हैं, भटकते हैं, आप क्या बोलते? शंकराचार्य, भ्रम, भव सागर, नितांत ब्रम, पागल के जैसा, इधर से उधर, उधर से उधर.

कोई बोलेगा, आपका शरीर बूढ़ा हो गया, पतला हो गया, जाड़ा हो गया. शरीर में जुरिया आ गई, वो ब्रंक, चमड़ी प, यह हो गया, वो हो गय

खेल आपका कुछ लेना देना नहीं उससे शरीर से परिवार बनते हैं

शरीर से आप सब सक्सेस हासिल करने की कोशिश करते हैं और पैसा और बड़े पद और बड़ा मेरा नाम होगा पेपर में। हम मैं एक सामाजिक मालूम हैय सामाजिक सब हर एक समाज के मैगजीन निकलते हैं। हमारे समाज में भी मैगजीन निकलते हैं। मैगजीन आता है मुझे हमारे दोस्त बोल रहे थे मैगजीन आता है ना तो लोग जो बड़े बड़े लोग होते हैं ना 1 स 200 पेज का मैगजीन है वो खोलते क्या देखते मेरा फोटो किधर है। वो खुद का फोटो देख के फिर मैगजीन रख देते है मेरा फोटो आ गया ना बस। क्या चाहते आप शरीर का जो फोटो है ना आपका तो फोटो निकल ही नहीं सकता आपका कैसे फोटो निकलेगा आप तो परम आनंद स्वरूप है। लेकिन शरीर का फोटो वो शरीर का फोटो पेपर में आना चाहिए हजारों लाख लोगों तक पहुंचना चाहिए। य ऐसी सब नई गेम चालू जाती है सब नई इंझट चालू जाती तो आपका हेल्थ का सब प्रॉब्लम्स परिवार का प्रॉब्लम्स करियर का प्रॉब्लम य सब शरीर से असोस है और फिर हम भटकते रहते हैं।

भटकाव और जीवन के असली मायने

मेरे शरीर को यह खाना है देखो इस शरीर के शरीर को खाना खिलाने के लिए लोग भटकते हैं भिखारी के जैसे। मैं तो अभी आया था इंडिया

में भिखारी के जैसे लोग आधा घंटा एक घंटा खड़े रहते लाइन में रेस्टोरेंट में कि भाई मर को खाना चाहिए। वो खाना उनके घर में भी है इस शरीर को कुछ नया चाहिए टेस्टी चाहिए स्पाइसी चाहिए नया-नया आइटम सैंडविच, डोसा कुछ भी पिज्जा सैंडविच फ्यूजन आइटम इंडो चाइनीज इंडो इटालियन। पिकचर में देखो नेटफ में। पहले पहले मैं जब छोटा था तो फ्राइडे को एक पिकचर आता था वो भी कोई कोई फ्राइडे नहीं भी आता था। फ्राइडे एक पिकचर रिलीज होने का अभी देखो रोज के 25 पिकचर रिलीज होते हैं, n पर देखो, अजन प्राइम पर देखो में देखो। इस शरीर को देखना है स्टिमुलेशन चाहिए एक्साइटमेंट चाहिए नए संगस चाहिए।

शरीर से जुड़ाव और उसकी असलियत

यह शरीर को तृप्त करने के लिए हम पागल हुए जा रहे हैं भटक रहे हैं। यह शरीर को तृप्ति मिले नहीं मिलती उसमें भटक रहे। क्यों आपको पड़ी इतने शरीर की इतना क्यों आप तिल मिला रहे हैं। आपने बोला य शरीर मेरा है य शरीर से जुड़ गए। शरीर से आइडेंटिफिकेशन और इसी प्रकार जीते हैं कि मैं शरीर हूं। य सब दुखों का कारण सब भटक भटकन का जो कारण है सब भटकते जो है ना उसका कारण शरीर से

असोसिएशन ऐसा शंकराचार्य कहते हैं। यह एक शंकराचार्य के हिसाब से त्व घटित घटना पटी यसी माया एक असंभव चीज एक राजा भिखारी हो गया।

परम आनंद और शरीर से जुड़ाव

परम आनंद, परम स्वतंत्रता और चैतन्य स्वरूप आप हैं। इस शरीर में ऐसे घुलमिल गए, ऐसे पागल हो गए शरीर के पीछे कि बस शरीर की बातें हमेशा शरीर, शरीर, शरीर। शरीर से ही हमारा नाता इतना गहरा हो गया। इससे अगर छूट गए तो परम आनंद वापस आ जाएगा। अभी देखो, शरीर से असोस कैसे हुए शब्दों में ही हुए, भाषा में हुए। कोई आपने परम आत्मा को कोई जंजीर से शरीर के साथ जोड़ा नहीं है। वह परम शक्ति को आपको परम शक्ति ने बोला उसके पास स्वतंत्रता है, उसने बोला शरीर मेरा। जैसे एक लड़की है, कोई भी आदमी को बोलेली "यह मेरा हस्बैंड है," तो हो गया। स्वतंत्रता है ना, और वह भी स्वतंत्रता है। वह बोलेली "अभी नहीं है, मेरा हब नहीं है," डावर्स तो हो गया खत्म।

शादी और स्वतंत्रता

छ महीने में लोग यहां पर, तो अमेरिका में 50% डावर्स होता है, 100% शादी पर। 100 लोग शादी करते हैं ना, और लाइफ व क्रिश्चन लोगों में जब चर्च में शादी होती है तो क्या बोलते हैं? "टिल डेथ डट अपार्ट," जब तक हमको मौत जुदा नहीं करेगी, तब तक हम साथ में रहेंगे। सुख और दुख में ऐसा करके एक्चुअल बोलते हैं, "आई अग्री, आई टेक दिस मैन एस माय मैन, दिस गर्ल एस माय वाइफ," ऐसा करके फिर वो पादी होते हैं बोल, "पनास यू एस मैन एंड वाइफ, आपको हस्बैंड होने का मैं घोषणा करता।" ऐसा बोलते हैं। अभी वैसे लोग जो सोचते हैं, "यह मेरी वाइफ है, मेरा हस्बैंड है," इससे हम एक दिन भी जुदा नहीं रह सकते, मर जाएंगे उसके बिना। तो 50% लोग डावर्स करते और छ महीने में भूल जाते हैं। हस्बैंड को भूल जाते हैं। यहां पर वो काउंसलिंग होता है, डावर्स काउंसलिंग। तो पहले लोग डावर्स होते रोते हैं, "मेरा चला गया, मेरा इतना प्यार था, इतना हमने अच्छा किया, सब डावर्स हो गया," छ महीने में एकदम भूल जाते। सब मेमोरी फेड हो जाती है।

शरीर से असोसिएशन और डिसोसिएशन

इंडिया में कम होते, लेकिन कोई मर जाता है, छ महीने, छ महीना भी ज्यादा बोलता। लोग तो वहां पर स्मशान में रहते हैं, ना मसान में जब

बॉडी को जलाने जाते हैं, दो तीन घंटा बैठना पड़ता है। घर के लोग हैं, उनको दो तीन घंटे में लोग बोलते चलो, कभी चाय पिएंगे, कभी नाश्ता करेंगे। दो घंटा भी शांति से बैठ नहीं सकते। तो देख रहे हैं, फिर जिनका परिवार का कोई मर गया है, उनको बेचारे को चाय की व्यवस्था करनी पड़ती, "इनको चाय पिलाओ सबको।" तो शरीर से जो डिसोसिएशन है, ना जिर से भी डिसोसिएशन एकदम इजी है। लोग इंडिया छोड़ के भारत, अमेरिका आते, दो महीने में भूल जाते भारत को। जिनको भूलना है, वो जिनको नहीं भूलना है।

जीवन का नज़रिया बदलें

वो दिन रात भारत भारत भारत भ कर अगर आप डिसोसिएट करना चाहते हैं खुद को तो बड़ी बात नहीं ऐसा लगता है कि नहीं होगा डिसोसिएट नहीं होगा लेकिन ये सब भाषा का खेल है। भाषा में अगर आपने एसोसिएशन बनाया है तो उसका डिस एसोसिएशन कैसे होगा? व भाषा से ही होगा। ऐसा नहीं अभी शरीर को सताओ शरीर को आपने बोला ये मेरा है अभी बोला शरीर दुख का कारण है। तो क्या करो? शरीर को सताओ, शरीर को पीड़ा दो, शरीर को मारो। ऐसे

नहीं करना है। ये भाषा में बोला ये शरीर मेरा है। बोलो अभी नहीं है मेरा। ईसा वास मदम सर्वम, ये शरीर क्या भगवान का सब है। मेरा कुछ नहीं है, शरीर भी मेरा नहीं है। य बोल दो।

भगवान का शरीर

ऐसे जियो, भगवान का शरीर है तो भगवान के हाथ में सब जाने दो ना। आप चिंता मत करो, बीच में मत पड़ो। जिसका जिसके, जिसका ओनरशिप उसकी जिम्मेदारी है। उसको सब करना पड़ेगा। आपने बोल दिया शरीर भगवान का, मेरा नहीं है। तो कोई बोलेगा आप मोटे हो, क्या करो? भगवान को बोलो, जो मालिक है उसको बोलो। मैं मोटा हूं क्यों? आपको डायबिटीज है, क्यों? मालिक को बोलो, मेरे को क्या डायबिटीज है। मेरे को क्या मालूम? तो जो शरीर से आपने एसोसिएशन बनाया है वो टूटेगा कैसे? कई बार लोग ऐसे सोचते, शरीर को सताओ, शरीर को पीड़ा दो, शरीर को गला, शरीर को भूखा रखो, सो मत। ऐसी तपस्या करो, जंगल में जाओ, नहाओ मत। ऐसे कोई शरीर को सताने का कोई मतलब नहीं है।

भाषा का खेल

यह भाषा का खेल है। जैसे आपके हस्बैंड से नहीं बनती तो हस्बैंड को सताने का कोई मतलब नहीं। छोड़ दो, बो डिंव खतम। और क्या? भाषा में बोला ना, ये मेरा है। भाषा में मेरा नहीं है। जिस क्षण आपने डिसोसिएट कर दिया लैंग्वेज में, य शरीर मेरा नहीं है। उसको फिर ऐसे नहीं बोलने के लिए, अगर शरीर तुम्हारा नहीं है ना फिर महावीर नगर में लाइन में खड़े नहीं रहने का, रेस्टोरेंट में फिर क्या लेना देना। भगवान का शरीर, भगवान भेजेगा। भगवान भेजते है ना, संतरा, मसबी, वो भेजते है, वो खा लो। असेल माजा हरी, त देल खाटल वरी, आपको मराठी में। असेल माजा हरी, भगवान होगा दे खटला वारी। मेरे को, मैं सोता हूं टले, मेरे को देगा टले वारी। तुमको क्या मिलेगा? भगवान ऑलरेडी पका के क्या दे रहा है? आपको फ्रूट्स, वेजिटेबल देता है, वो।

खाओ अगर भगवान का शरीर है तो भगवान की आइटम भगवान दे दे

क्या खाने का पर आप बोलते हैं नहीं आप बोल मेरा शरीर है मेरे को भोगना है मेरे को पानी पूरी खाना है पाव भजी खाना है टेस्टी अच्छा लगता है फिर आपकी मर्जी फिर कभी खुशी कभी गम में जियो फिर

जीवन के दुख आएंगे तो रोने मत बैठो बोलो मेरी चॉइस है मेरे को शरीर से एसोसिएट होना है और शरीर के सब दुख मुझे भोगने भोगो। इतना तो ईमानदारी लाओ कि मैं परम आनंद रूप परम चैतन्य रूप आत्मा जिसका कोई विभाजन नहीं हो सकता वैसा मैं हर एक शास्त्र में कहते हैं गीता में भागवत में उपनिषद में धर्म पद में जैन शास्त्रों में हर जगह कहते हैं कि आप क्रिश्चियन रिलीजन में भी कहते कि आप भगवान के पुत्र हैं आप ऐसे परम आनंद परम प्रेम स्वरूप आप वैसे व्यक्ति होकर भी आप भटक रहे हैं। ऐसी शक्ति ऐसी ऊर्जा होकर भी आप भटक रहे क्यों आपने बोला शरीर मेरा है।

शरीर की पहचान और दुखों का सामना

अगर आप बोलना ही चाहते हैं शरीर मेरा है मैं शरीर हूं तो भटको ईमानदारी तो लाओ बस शरीर से आइडेंटिफिकेशन दिखाओ। खाना है जी को हर एक इंद्रियो को कुछ ना कुछ सुख चाहिए दे उनको। व भव सागर में फस गए क्या बोलते शंकराचार्य ऐसे ब्रम भव सागर सागर निता कितने भटकते हैं लोग कितने भटकते हैं कितने दुखी होते हैं कितनी पीड़ा कि कितना दुख सुबह को से उठता है कि वाह वाह प्रभु वाह ये अद्भुत दुनिया में मेरे को आज एक और दूसरा दिन मिला।

आज मुझे अगर आप शरीर से असोस तो वजन की चिंता करेंगे आपने सोचा शरीर भगवान का है तो भजन की चिंता करेंगे। तो वजन की चिंता नहीं करना है भजन की चिंता करो भजन करेंगे। ऐसा शरीर ऐसा उठ के ऐसा होता है कि आज मुझे एक दिन और मिला है भगवान का भजन करेंगे ध्यान करेंगे यह परम आनंद की बातें करेंगे।

भक्ति और भारतीय संस्कृति का महत्व

ऐसा कभी होता है सुबह उठके आप प्रभु को याद करेंगे क्योंकि यह शरीर का उपयोग यह भाषा का उपयोग यह मुंह का उपयोग यह जीभ का उपयोग प्रभु स्मरण में भी हो सकता है पांव भाजी खाने में भी हो सकता है। आपने अगर सोचा य शरीर मैं हूं मेरा हूं तो उसका उपयोग आप ऐसे करेंगे जिससे आप कभी खुशी कभी गम इस दुनिया में डूबते चले जाएंगे और यह कैसा है जो एलोपैथिक दवाई खाते ना हम कभी भी डायबिटीज ब्लड प्रेशर की शुरू में एक गोली खाते हैं और आनंद मिलता है शांति मिलती है सुकून मिलती है। एक गोली खाते हैं सुकून मिलता है शांति मिलता है रिलीफ मिलता है अगर लेकिन आपने लाइफ स्टाइल चेंज नहीं किया तो एक के दो दो के तीन गोली बढ़ती जाएगी। वैसे जीवन में पहले कभी खुशी कभी गम है अगर आपने

लाइफ स्टाइल चेंज नहीं किया तो गम बढ़ता ही जाएगा पहले एक गम फिर दो फिर दुख बढ़ता ही जाएगा तीन चार। शरीर से असोसिएशन कर देंगे शरीर से शरीर के संबंधों से डिसोसिएट कर दिया खुद को आप देखेंगे। जरा य अमेरिका में देखता हूं इंडियन लोग जो अमेरिका शिफ्ट होते हैं ना वो ज्यादा खुश उनको काफी सारे लोग यंगस्टर रहते वो ज्यादा खुश है। क्यों क्योंकि वो जो शरीर के संबंध थे ना इंडिया में कोई झंझट नहीं यहां पर किसी को कोई पूछेगा नहीं तुम्हारा पगार कितना है तुम्हारा शादी क्यों नहीं हुआ तुम्हारे बच्चे क्यों नहीं हुए ऐसा कोई पूछेगा। आप अपनी अपनी जिंदगी में लोग मस्त रहते हैं शरीर के संबंधों से दूर हो और आपको ऐसे भारत छोड़ के जाने की जरूरत नहीं है। मन दिमाग से लैंग्वेज से आपने बोला है यह शरीर मेरा है यह परिवार मेरा है यह परिवार के लोग मेरे हैं या तो फिर आप ऐसा बोल दोगे ये सब शरीर मेरे हैं। पूरा दुनिया मेरा है मैं ही हूं पूरा दुनिया मेरा परिवार है वसुदेव कुटुंबकम या तो आप छोड़ दो शरीर से यह जो गहरा तादाद में है वो डिसोसिएट कर लो। इसलिए हमारे भारतीय संस्कृति में भक्ति का इतना महत्व है।

भक्ति का महत्व

क्यों है एटलीस्ट य शरीर से आप संबंध हटा के भगवान के साथ जोड़

दो हमारा जो पुष्टि मार्ग है उसमें तो हम दिन में आठ बार भगवान के दर्शन करो भगवान का मंगला फिर राज भोग फिर भगवान खेलने जाएंगे फिर भगवान खाना खाएंगे फिर भगवान सोने जाएंगे आठ बार दर्शन करने सुबह से लेकर शाम तक सुबह 7:00 बजे उठ गए शाम को 6 बजे तक 12 घंटे में आ आठ बार दर्शन मतलब हर डेढ़ घंटे में भगवान का दर्शन करना तो आपको शरीर की फिक्र नहीं पड़ेगी।

शरीर से डिस सोट

फिर फिर आप भगवान की फिक्र करो हर एक हर एक धर्म में भक्ति का इतना महत्व है कि आप शरीर से डिस सोट हो जाओ भगवान से सोट हो जा या तो आप इतना ज्ञान समझ लेंगे कि यह शरीर आपका है नहीं आपने बनाया क्या शरीर आपको कुछ मालूम है शरीर कैसे चलता है कैसे बोल सकते य शरीर मेरा है आपने बनाया नहीं आपने खरीदा नहीं आप खरीद भी नहीं सकते य ऑटोमेटिक हो रहा है बोल

नहीं सकते ज्ञान से भी आप छोड़ सकते हैं डिस हो सकते हैं य ईश्वर का है आप जैन धर्म में एक बहुत अच्छी पद्धति है मुझे अच्छा लगता है जो साधु होते हैं ना जन धर्म के वो भिक्षा के लिए निकलते हैं गोचरी बोलते उसको व खुद पैसा रखते नहीं है कुछ नहीं उनके पास कोई एसेट नहीं होता है व बाहर लोग उनको खाना देते व खाते येय उनका नियम रहता है जन साध ऐसा नहीं कि आज उनको मन यह खाना है वो ऐसा कुछ नहीं जो लोग देंगे वो खाना खाएंगे।

भगवान की व्यवस्था

अभी उनमें व्रत ऐसा रहता है वह क्या बोलते ज साधु की अगर भगवान को अस्तित्व को मुझे टिकाना है य शरीर को टिकाना है तो वह व्यवस्था करेगा हमको ऐसे बैंक में एफडी रखने की जरूरत नहीं है हम जिएंगे तब तक इस शरीर को अगर जिंदा रखना है उसका शरीर है ईश्वर का वो व्यवस्था करेगा तो गोचरी के लिए जब निकलते हैं तो ऐसे बोलते हैं और भगवान को बोलते देख तेरे को अगर मुझे जिंदा रखना है आज तो लीली लीली साड़ी पहन के कोई सौभाग्यवती स्त्री अगर मुझे खाना देगी तो मैं लूंगा य सीक्रेट में ऐसे मन मन से ऐसे वो बनाते हैं सिंबल

बनाते हैं अभी गए गांव में कोई लीली साड़ी वाली लड़की नहीं मिली तो नहीं खाना खाएंगे आज उपवास भगवान ने व्यवस्था नहीं की ना इतनी बड़ी श्रद्धा कि अगर भगवान की भगवान का शरीर है

भगवान का जीवन है

उनको जि जिंदा रखना है वो व्यवस्था करेगा नहीं करेगा तो मतलब क्या वो चाहता है कि आप भूखे रहो? उसका शरीर व शरीर को भूखा रखना चाहता है तो रह जाओ। जब आपने सब यह एसोसिएशन छोड़ दिया, अब मुक्त हो गए। अभी के अभी मुक्त हो गए। फिर आपका लड़के को नौकरी कौन दिलाएगा? उस आपका कैसा लड़का, वो सब है उसका है सब प्रभु की संतान है। वो दिलाएगा नौकरी। वही शादी करेगा लड़के का जो करना है वह करेगा। आप मुक्त हो गए यह ब्रह्मणा में यह भ्रम यति शंकराचार्य बोलते।

भ्रम यति भव सागरे

नितांत बहुत भटक लिया अभी बहुत भटक लिया कितना भटक। अभी शरीर से एसोसिएशन छोड़ देंगे तो भटकन बंद हो जाएगी। और फिर आप क्या महसूस करेंगे? आप महसूस करेंगे सुख चि खंड वि बोध बोध है। आप परम सुख है चि अखंड कॉन्शसनेस अखंड है

अद्वितम है। यह आप महसूस करेंगे। आपकी जो एनर्जी है आपका परमानंद है उसको महसूस करेंगे। तो आज से सब याद रख नहीं रहेगा। इतना याद रखो।

भजन का सोचो

भजन का सोचो। शरीर की सब जरूरत है ना। वो भगवान पर छोड़ दो। आप अनुभव में जिए क्या परमा आनंद है और हर एक दिन हर एक क्षण य आनंद को यह प्रेम को अभिव्यक्त करना है। सबका जीवन में य अभिव्यक्ति आ जाए ऐसी। मैं भगवान को प्रार्थना करता हूं माया पंचक के पांच ही श्लोक है आज। हमने तीसरा श्लोक कंप्लीट किया और दो श्लोक नेक्स्ट सडे और उसके बाद के सडे करेंगे। शंकराचार्य ऐसे छोटे छोटे पंच कम वाले पांच पांच लोक के अष्टक आठ लोक वाले ऐसे काफी सारे बनाए हैं अभी यह साल में ऐसा भाव है कि जो बहुत पावरफुल स्तोत्र है शंकराचार्य के छोटे छोटे उसका हम अभ्यास करेंगे। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। जागृति बेन शाह डॉक्टर लालका प्रफुल भाई अल्पा प्रवीणा बेन ज सिंह कापिया भाई कम जय श्री कृष्णा आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने आज जवाइन किया आप की मौजूदगी के लिए आपको अप्रिशीएट करता हूं। फिर

नेक्स्ट वीक में मिलेंगे। हम लोग थैंक यू वेरी मच। अल्पा आई अप्रिशिएट योर प्रेजेंस और सबके जीवन में यह शरीर का जो मोह है वह छूट जाए और परम आनंद आ जाए। ऐसी भगवान से प्रार्थना करता हूं।

माया पंचकम सत्र -4

माया का जादू और अखंडानंद की अनुभूति

रसमय बोधि के आज के इस सेशन में माया पंचकम के पांचवे श्लोक का पवित्र और दिव्य अभ्यास करने के लिए आप सबका स्वागत है। माया को समझने से अखंडानंद की तरफ जाने का एक नया मार्ग खुल सकता है। आज हम इस श्लोक का अध्ययन करेंगे। पहले श्लोक पढ़ते हैं और फिर उसका अभ्यास करते हैं।

क्या कहते हैं शंकराचार्य:

अपग गुण वर्ण जाति भेद सुख चित प्रम हम कृतिम स्ट सुत दार
गह मोह त्व घटित घटन पटी यसी माया सब यह पांचवां श्लोक है।
आज हम चौथा श्लोक कर रहे हैं। चौथे श्लोक में हर एक श्लोक में चार लाइन हैं, और चौथी लाइन हमेशा आती है "त्व घटित घटना

पटी यसी माया”। माया एक ऐसा जादू है जो असंभव को संभव कर दिखाती है। यह ऐसा चमत्कार है जिसे कोई अन्य नहीं कर सकता। हमारे जीवन में, हमारे अस्तित्व में, हमारे आजूबाजू अभी इस क्षण जादू हो रहा है।

नेटफ्लिक्स पर थ्रिलर, सस्पेंस मिस्ट्री मूवी देखने की जरूरत नहीं है। आपके जीवन में सस्पेंस, थ्रिलिंग, मिस्ट्री चल रही है। आप इसे नॉर्मल लाइफ मान सकते हैं या जादू समझ सकते हैं। यह माया का जादू है कि आप और हम इस दुनिया के करीबन 800 करोड़ लोग परम आनंद से बने हैं। गुलाब जामुन शक्कर से बना है और शहद मीठा होता है। अगर शक्कर कड़वा हो जाए या शहद कड़वा हो जाए तो यह असंभव लगेगा।

माया की असंभवता और अखंडानंद की वास्तविकता

जैसे आग जलाने का स्वभाव रखती है और पानी बुझाने का, वैसे ही अगर पानी पेट्रोल जैसा हो जाए और आग ठंडा करने लगे तो यह असंभव लगता है। आप अखंड आनंद से बने हैं और दुखी होते हैं। आपका रॉ मटेरियल अखंड आनंद है, लेकिन आप दुखी हो जाते हैं। जैसे रोटी गेहूं से बनती है और राइस चावल से, वैसे आपका शरीर भी

कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन से बना है, लेकिन आपका असली तत्व अखंड आनंद है।

आप कहते हैं "मैं दुखी हो गया", "मैं अकेला हो गया", "मैं चिंता में आ गया", "मैं डर गया", "मैं थक गया", "मैं हार गया", "मैं निराश हो गया", "मेरी दुनिया में कोई नहीं है"। यह असंभव घटनाएं हैं। यह घटनाएं माया के कारण घटित हो रही हैं। माया का जादू आपके वास्तविक स्वभाव को बदल देता है और असंभव को संभव कर दिखाता है।

इस प्रकार, शंकराचार्य माया के माध्यम से हमें यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि हमारा वास्तविक स्वरूप अखंड आनंद है, लेकिन माया हमें इस वास्तविकता से दूर कर देती है। माया का जादू हमारे जीवन में असंभव को संभव कर दिखाता है, जिससे हम अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाते हैं।

भाग 1: माया की वास्तविकता और आनंद की अनुभूति

माया कैसे बनती है ऐसी घटना पहली तो बात जैसे शंकराचार्य को दिख रहा है किय घटना संभव घटना बन रही है वैसे आपको दिखना चाहिए ये घटना असंभव बन रही मेरी नजरों के सामने जो हो नहीं सकता है जो होना नहीं चाहिए वो हो रहा है सारी दुनिया में सब लोग

दुखी है पीड़ित है कभी कभी आनन भी होता है पिक्चर देख लेते हैं कभी होली आ गया दिवाली आ गया कुछ आनंद कर लिया खाना खा लिया अच्छा सा घूमने चले गए लेकिन डे टू डे लाइफ सुबह उठके आ क्या आज आनंद का अनुभव और अभिव्यक्ति का भगवान ने और एक दिन दे दिया चलो आज के दिन आनंद की परिपूर्ण अभिव्यक्ति करते हैं जो मिलेगा उनको प्यार से खुशी से बाटेंगे आज प्यार और खुशिया को बाटेंगे ऐसा सुबह में विचार आता है आंख खोलते हो जाने दो आज प्यार की वर्षा आनंद की वर्षा फिर ऐसे नहीं सोचेंगे इसने मेरे से पहले झगड़ा किया था अ इसके साथ क्यों मैं आनंद से बात करूं आपका स्वभाव आनंद है किसी ने झगड़ा किया लेकिन आपको तो आनंद ही बरसाना है आप तो आनंद बरसाए ऐसा होना चाहिए तो स्वाभाविक है तो स्वाभाविक है अरे हर एक व्यक्ति उठके परिपूर्ण आनंद और प्रेम से अपनी अपने आप को अभिव्यक्त करता है तो स्वाभाविक घटना है नेचुरल है नॉर्मल है लेकिन अगर ऐसा कोई कर रहा है तो आपको एर्मल लगता है क्या हो गया इसको जरा ज्यादा ही वो कर रहा है साइकेट्रिक केस लग रहा है ज्यादा उसका डोपामाइन बढ़ गया है क्या है इतना क्या खुश है इतना क्यों हसता है इतना क्यों अगर कोई ज्यादा प्यार से बात करेंगे हम सोचेंगे क्यों इतना

ज्यादा प्यार से बात कर रहे हैं क्या करना है क्या चाहिए उसको मुझसे हम डरते हैं ज्यादा बहुत प्यार से लोग अनजान लोग हमसे बात करेंगे अरे जानकार भी लोग बात करेंगे कोई रिलेटिव कभी फोन नहीं करता है आपको फोन करेगा पहला ख्याल क्या आएगा कुछ तो काम होगा उसको ऐसा ख्याल आएगा वो अपने प्यार के अभिव्यक्त करने के लिए फोन कर रहा है ऐसे ही ख्याल आएगा ना कुछ तो है बात क्या है ये तो जो जब प्यार को अभिव्यक्त करते हैं लोग खुशी को अभिव्यक्त करते हैं तो लोग ऐसे सोचने लगते हैं कि कुछ नॉर्मल नहीं है कुछ ए नॉर्मल है लेकिन वो लोग दुखी बैठे हैं चिंता में बैठे हैं डर के बैठे हैं डिप्रेशन में है बीमार है और सब पर शंका कर रहे हैं इसका यह इसका वो तो लगता य नॉर्मल है य आदमी नर्मल हसते नहीं है ज्यादा जो लोग जो लोग बहुत इस पर रिसर्च करते हैं ना ह्यूमन बिहेवियर पर ह्यूमन क्या बोलते उसको ग्रुप डायनेमिक्स में बोलते ज्यादा हसना नहीं चाहिए ज्यादा स्माइल करेंगे हसेंगे तो वो डेमेट करता है में नहीं

भाग 2: ह्यूमन बिहेवियर और सामाजिक परिप्रेक्ष्य

अब देखिए पॉलिटिशियन लोग ज्यादा इतने हसते नहीं हैं क्यों उनको दिखाना है वो पावर में है पावर वाले लोग है वो ज्यादा हसेंगे नहीं ज्यादा

हसते मतलब क्या ज्यादा खुश होंगे तो मतलब क्या अब सिंपल हो ग साधारण हो ग खुले दिल से कम लोग हसेंगे जो लोग पॉलिटिशियन है पावर में है जिनको ये दिखाना है पावरफुल है ये ए नॉर्मल य यह चीज हमको नॉर्मल लगती है और जो ज्यादा खुश है आनंद में है मस्ती में है और ज्यादा यह ज्ञानी लोगों को देखो ज्ञानी लोग जो गंभीर होकर बात करते एकदम गंभीरता से जैसे कोई बड़ा तत्व ज्ञान बोल रहे हैं उनके चेहर गंभीरता है उनकी बातों में गंभीरता है तो लगता है य कुछ बड़े ज्ञानी है एकदम बोलचाल की भाषा में हंसते हंसाते बात करेंगे तो लता है एकचल ज्ञानी नहीं है तो जो व्यक्ति आनंद को अभिव्यक्त करता है प्रेम को अभिव्यक्त करता है वो लगता है नॉर्मल नहीं और जो व्यक्ति अपने घमंड को अभिव्यक्त करता है लगता है नॉर्मल

अखंड आनंद की ओर यात्रा

है ऐसी हमने ऐसी अभी हमारी व्यवस्था हो गई है। ये टट घटना पट्टी यसी माया ऐसा हो गया अभी। हमको तो क्या है हमको तो अखंड आनंद तक जाना है। हमको यह कभी-कभी खुशी कभी गम की दुनिया ये दुख ये पीड़ा ये टेंशन नहीं चाहिए। हमको चाहिए अखंड आनंद, मौज मस्ती, पूरे दिन और लोगों के भी जीवन में आनंद हो ऐसी।

ऐसी आनंद नहीं चाहिए कि दूसरे को तकलीफ हो जाए। हमारी आनंद की अभिव्यक्ति ऐसे हो कि सबको आनंद मिले, सबको प्रेम मिले। हमारा प्रेम ऐसा नहीं है कि अभिव्यक्त करने पर सबको दुखी हो जाए। आपके प्रेम से लोग दुखी हो जाएं, लेकिन आपका प्रेम और आनंद ऐसे अभिव्यक्त करना है कि सबको आनंद, प्रेम, प्रेरणा मिले। इस साधना में हम लगे हैं, इसके लिए हम शंकराचार्य का हाथ पकड़ रहे हैं, उनका सहारा ले रहे हैं और चल रहे हैं। अभी शंकराचार्य को क्या असंभव चीज दिखती है? ये श्लोक में वो क्या कहते हैं? उसका मीनिंग बोलता हूं मैं।

सच्चिदानंद और माया का भ्रम

वो बोलते हैं कि यह जो अपगुण, वर्ण, जाति भेद, सुख विपरीत, विडम्बना, मोह जो आप है ना, आप जो एक्चुअल स्वभाव है वह है सच्चिदानंद। उसके अंदर जहां पर कोई वर्ण नहीं है, गुण नहीं है, जाति नहीं है, भेद नहीं वैसे आप हैं। आपके अंदर ऐसे नोशन, कैरेक्टरिस्टिक, गुण, धर्म पैदा होते हैं। ऐसा लगता है आपको, ऐसा लोग कहते हैं कि मैं ब्राह्मण हूं, मैं बनिया हूं, मैं काला हूं, गोरा हूं, मेरा यह कैरेक्टरिस्टिक है, मैं पतला हूं, मैं मोटा हूं, मैं बूढ़ा हूं, जवान हूं और यह मेरी पत्नी है, यह मेरे

पति है, ये मेरा बेटा है, ये मेरा परिवार है और अपने आप को ऐसे आप जो अनंत हैं, अखंड हैं, आनंद स्वरूप हैं वैसे आप अपने आप को एक छोटा सा डायरेक बनाते हैं। आप बोलते हैं, मैं ब्राह्मण हूं, हिंदू हूं, बनिया हूं और मैं यह हूं, मैं वो हूं, मेरी पत्नी है, मेरे बच्चे हैं, मेरा परिवार है, इतना मैं हूं, ऐसा आप बना देते हैं खुद को।

जो अखंड है, उसको आप तोड़ देते हैं, माया तोड़ देती है और जितने आप टूटे हुए हैं, उतना आपका आनंद छोटा होता है। ये इक्वेशन याद रखिए: जितने आप छोटे, उतना आपका आनंद छोटा। जितने आप विराट, उतना आपका आनंद विराट। क्या मतलब है छोटा होना और विराट होना? क्या मतलब है? मैं आपको एक उदाहरण शेयर करता हूं, तो आपको थोड़ा सा स्पष्ट होगा। क्योंकि मेरा तो गांव में जन्म हुआ, मेरी माताजी का गांव में जन्म हुआ, तो मैं भाग्यशाली हूं, बहुत भाग्यशाली हूं। बचपन में गांव की जीवनशैली, गांव की संस्कृति का मुझे अनुभव हुआ।

तो हम लोग, मेरी माताजी, मैं, मेरी बहन, मेरा भाई, हम लोग वेकेशन में मामा के घर गांव जाते थे। मेरे पिताजी भी आते थे। तो कभी-कभी गाड़ी ड्राइव करके जाते थे, कभी ट्रेन में जाते थे, कभी बस में जाते थे।

जब हम गांव में मामा के घर जाना होता था, तो पहले मार्केट जैसा आता था। बस स्टॉप के बाजू में मार्केट आता था। वहां पे एक छोटी-छोटी दुकान होती थी। गोटी वाली सोडा मिलती थी। गोटी रहती है ऐसे दबाने का, और वो सोडा देते। तो मैं और मेरे पिताजी और माताजी मुंबई से आ रहे थे। फिर बस स्टॉप के पास दुकान में गए। हमने सोचा चलो, सोडा पी लेते। मुंबई से आए हैं, थक गए हैं, सोडा पी लेते। सबने सोडा पिया। दुकान वाले ने सोडा दिया। फिर पिताजी ने पूछा, कितना पैसा देना है?

अखंडता और अस्थाई अभिव्यक्ति

आपका खंड नहीं है। आप यह शरीर से अव्यक्त हो रहे हैं, लेकिन आप जो हैं, जैसे समुंदर का पानी। समुंदर तो अखंड है, समुंदर में कोई खंड नहीं है, टुकड़े नहीं हैं, लेकिन वह समुंदर का पानी एक समुंदर की वेव में अभिव्यक्त होता है। कोई छोटा, कोई बड़ा, ऐसे वेव में अभिव्यक्त होता है टेम्परेरी, लेकिन पीछे तो पूरा समुंदर है ना। वैसे आपके भीतर या शरीर या मन में टेम्परेरी या वाणी में परमात्मा अभिव्यक्त होता है थोड़े टाइम के लिए, लेकिन पीछे तो परमात्मा सबसे कनेक्टेड है।

यह जो टेम्परेरी अभिव्यक्ति के पीछे कि यह जो अनंत अखंड ऊर्जा है, टेम्परेरी आपकी अभिव्यक्ति के पीछे हुई, जो अनंत अखंड ऊर्जा है उसको महसूस कर लिया, उसके संपर्क में आ गए, उसका एहसास कर लिया, उसकी समझ आ गई, उसको पहचान लिया। तो आप भी अनंत हो गए, फिर आप सबसे कनेक्ट हो गए, अखंडानंद में आ गए। फिर यह जो टेम्परेरी शरीर मन, यह जो आइडेंटिटी है ना, आपकी बनाई है, उसमें कुछ गड़बड़ होती रहेगी। उससे आपको लेना देना नहीं, उससे आप इतने अटैच नहीं होंगे।

विस्तृत आनंद का अनुभव

हम अपना कितना विस्तृत करना चाहते हैं, उसके ऊपर हमारे आनंद की विस्तृत डिपेंडेंट है। और जितना भी हम दुख पा रहे हैं ना, अभी जो आप दुख पा रहे, खुद को छोटा कर दिया, खुद के प्रॉब्लम फिर हमको बड़े लगने लगते हैं। जितना अपने को छोटा करेंगे, तो बच्चे को नौकरी नहीं मिल रही ना, वो इतना बड़ा प्रॉब्लम लगेगा। मेरे बच्चे को नौकरी नहीं मिलती, तो रशिया-यूक्रेन में युद्ध हो रहा है, हजारों लोग मर रहे हैं, उसका हमको कुछ नहीं लगता।

हम अपने लड़के को नौकरी नहीं मिल रही क्यों? अभी आपने खुद को इतना छोटा कर दिया। यही चिंता लगी रहती है। अब इसका कैसे सलूशन निकलेगा, कुछ नहीं है उसका सलूशन। अब सोच मेरा, मेरा, मेरा।

अगर हसबैंड और मेरे बीच में झगड़ा हो गया, अभी इसका क्या सलूशन? कुछ नहीं है, उसको भूल जाओ। अपने आप को विस्तृत महसूस करो और वह विस्तृत आनंद को अभिव्यक्त करो। ये जो छोटी आइडेंटिटी हमने बनाई है, उसमें छोटे-छोटे प्रॉब्लम्स हैं, लेकिन आपने यह सोच लिया कि आपका अस्तित्व ये छोटी आइडेंटिटी ही है। उसके सब प्रॉब्लम में हम पागल हो जाएंगे। उसके जो सब प्रॉब्लम हैं, वह हमको पागल कर देंगे।

टेम्परेरी छोटे-छोटे प्रॉब्लम जो हैं, उनमें हम देखिए अखंडता को। अखंडता को खंडित कैसे होते हैं, उसका मैं आपको एग्जांपल देता हूं। एक अखंड परिवार है, एक अखंड अस्तित्व के हिस्से हैं। आप टुकड़े हो गए, वो कैसे टुकड़े होते हैं? एक अखंड परिवार है। जैसे हमने रामायण में देखा, एक अखंड परिवार है, दशरथ राजा का परिवार है। तीन रानियां हैं, कौशल्या, सुमित्रा, कैकयी। चार बच्चे हैं, राम, लक्ष्मण, भरत,

शत्रुघ्न। एक सुखी परिवार और राम का राज्याभिषेक हो रहा है। पूरा अयोध्या, पूरा परिवार खुश है। आज हमारे राम राजा बनेंगे। ये अखंड आनंद की अभिव्यक्ति हो रही है।

अभी मंथरा, जो कैकयी की दासी है, वो कैकयी को बोलती है, "अरे यह अलग है, तू अलग है, तेरे बेटे को राज्य नहीं मिल रहा है। यह राम को राज्य मिलेगा।" अब ये मंथरा जो है ना, वो माया जैसी है। उसने डिवीजन चालू कर दिया, बोल दिया, "तू अलग है।" कैकयी ऐसे सोचती थी कि मैं राम की मां ही हूं। मंथरा ने बोला, "तू उसकी मां नहीं है, तेरा बेटा यह है।"

भाग 1: खेल प्रतियोगिता और मान्यता का महत्व

है ये मैं इंडिया में था ना स्कूल में वो स्पोर्ट्स वगैरह कंपटीशन होती है ना कोई लड़का फर्स्ट आता है व दौड़ में रनिंग कंपटीशन व फिर मदर लोग बोलते अरे वो जल्दी थोड़ा भागा था मेरा बेटा पीछे था लेकिन उसने बराबर अने न टूथ बोला तब भागा बच्चों की गेम अरे वो जो फर्स्ट आया वो भी तेरा ही बेटा है मेरा बेटा सेकंड आया उसका बेटा फर्स्ट आया। य ऐसे रामायण में होता है वो नहीं आज भी होता है

उसका बेटा फर्स्ट मेरा बेटा सेकंड सब बेटे आपके जो फर्स्ट आया वो आपका बेटा है।

आज देखिए यहां पर भी बहुत होता है हम बहुत ऐसे कंपेयर करते हैं ना इसका बेटा अच्छा है अरे जिसका बेटा अच्छा लगता है वह आपका बेटा है। उसका बेटा बहुत मां बाप का ध्यान रखता है व आपको ही समझ दो वही मेरा बेटा है और जो मां बाप मेरे भाई है उसका ध्यान रख बराबर है तो उसकी बहु अच्छी है जो बहु अच्छी है वो आपकी है बोल दो य तू मेरी बह है इसम क्या है कोई ना बोलेगा किसी को जाकर बोलो भाई तू मेरा बेटा है कोई ना बोले बो ठीक है अपना मान लो यही खुशी चाहिए ना आपको आपका बेटा बहुत महान होना चाहिए।

भाग 2: समाज में अखंडता और समर्पण की भावना

मेरा बेटा बहुत पैसे वाला होना चाहिए तो कोई मुकेश अंबानी सो मेरा ही बेटा है हो गया। आपको पैसा तो नहीं चाहिए ना आपको खाली खुशी चाहिए ना मेरा बेटा बहुत आगे बढ़ गया उसको बेटा मान लो जिसको आप सोचते थे आगे बढ़ गया उसको मान लोय मेरा बेटा है। स्वामी विवेकानंद जब आए ना अमेरिका बहुत अच्छा लेक्चर दिया बहुत अच्छी फिलोसॉफिकल बात की। एक अमेरिकन लड़की उनके

साथ पास आई बोला स्वामी जी आपकी बातों से मैं बहुत प्रभावित हो गई आप मुझसे शादी करिए। स्वामी जी ने बोला क्यों बोला मैं आप जैसा बेटा चाहती हूं मेरे से शादी करेंगे हमारा संतान होगा आप जैसा मुझे बेटा चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने कहा इतनी तकलीफ क्यों मुझे ही अपना बेटा मान लो मैं ही आपका बेटा हूं ये पूरा अस्तित्व आपका ही है।

लेकिन मंथरा क्या करती है डिवीजन पैदा करती है तो जो अखंड परिवार था दशरथ का व टूट गया बिखर गया क्यों मेरा अलग उसका अलग मेरा बेटा अलग उसका बेटा अलग परिवार खत्म हो। यह माया करती है माया का यह काम है मंथरा जैसा काम कि जब हम अलग अलग हिस्सों में अपने को बांटते मंथरा ने दो हिस्स में बाटा मेरा राम अलग है मेरा भरत अलग है लेकिन हम तो और हिस्सों में बांटते मैं ब्राह्मण हूं मैं बनिया हूं मैं मेरी पत्नी मेरे पति मेरा परिवार य छोटा सा ही मेरा परिवार है। ऐसे हिस्स में बाट दिया तो हम दुखी है अ इसमें हमको अभी अखंड में जाना है।

तो रास्ता क्या है देखिए कभी भी जब आपको कुछ नया करना है ना तो जो पूरी दुनिया को यस नेचुरल लगता है ना उसको चैलेंज करना

पड़ेगा। फिर से कहता हूं आपको कुछ बढ़िया क्रिएट करना है जीवन में कुछ क्रांति चाहिए तो जो लोगों ने स्वीकार कर लिया कि यह ऐसा ही है उसके सामने आपको चैलेंज उठानी पड़ेगी। जैसे आप एग्जांपल दू की पहले लोग मानते थे कि पृथ्वी है सपाट है फ्लैट है और पृथ्वी घूमती नहीं है सूरज घूमता है दिखता है ना सूरज घूमता है। जब साइंटिस्ट ने उसको चैलेंज किया कि नहीं पृथ्वी गोल है और पृथ्वी घूमती है सूरज नहीं घूमता है तो पहले लगा पाल पागल है ये लोग लेकिन उन्होंने ही क्रांति की।

पहले हमको लगता है टाइम फिक्स है बहुत सालों तो लगा टाइम फिक्स है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने उसको चैलेंज किया टाइम रिलेटिव है पागल लगा समझ में नहीं आता क्या बोलता।

है 200 साल तक 200 साल में करीबन आ से 10 जनरेशन चली जाती हम हमारा देश परतंत्र था ब्रिटिश सरकार की हमारे पर हुकूमत थी और पूरी दुनिया में आधी दुनिया में हुकूमत थी ऐसा मानते थे सन नेवर सेट्स ऑन ब्रिटिश एंपायर दुनिया में जापान में पहले सूरज उगता है और यहां पे अमेरिका में सैन फ्रांसिस्को में सेट होता है ना तब तक पूरा दुनिया में जहां प भी सूरज उगता है ब्रिटेन का ताकत चलता है वहां पे

ऐसा मानते थे 200 साल तक वैसे ब्रिटेन को कोई आकर बोलेगा हम आजादी हमारा हक है हमको आजाद होना है तो यह जो है स्टेटस को जो परिस्थिति है उसको चैलेंज किया वो लोग कुछ नया क्रिएट करते हैं तो अभी क्या परिस्थिति है हमारे जीवन में कि भाई मैं ब्राह्मण हूं यह मेरी पत्नी है मेरा परिवार है मैं गोरा हूं या काला हूं और यह मेरा जीवन है बस भा मेरे को कुछ ज्यादा समझ में नहीं आता है य मैं और मेरे को और बड़ा फ्लैट लेना है दो बेडरूम है तीन बेडरूम लेना है एक गाड़ी है दो गाड़ी लेनी है और अभी संडे है कल घूमने जाना है बस य मेरा जीवन और कुछ नहीं करना है ना खाना और नया नया अब यह जो नॉर्मल जीवन की जो कल्पना है उनको जो चैलेंज करते हैं क्या ऐसे नहीं चाहिए हमको पशु जैसा कभी खुशी कभी गाव को अखंड आनंद में जाना है व चैलेंज करते व नया रास्ता ढूंढते व नया रास्ता क्या दिखा रहे है शंकराचार्य जो आपने अपने डिवीजन बनाए ना उसको निकालो ऐसे मत सोचो इतना ही मेरा परिवार है ऐसे चालू करो यह भाई का परिवार मेरा परिवार है और बहन का परिवार भी मेरा परिवार है य बहन भी मेरी इतना तो चालू करो यह भाई बहन सब मेरे चाचा मामा सब मेरे हैं और बड़ा बनाते जाओ अपने आप य पूरा जो मेरे क है यह मेरे नेबर है सोसाइटी य भी सब मेरे मैं उनका हूं इतना थोड़ा सा जितना कंपनी में

काम करते कंपनी भी मेरी है क्लाइंट भी मेरे हैं स्टाफ भी मेरा परिवार है सिर्फ पत्नी और बेटा मेरा परिवार नहीं मेरे ऑफिस का स्टाफ मेरे घर का स्टाफ मेरे क्लाइंट सब मेरे परिवार

अभी जैसे अभी अपना भारत में मोदी सरकार का एक नया है ना मोदी का परिवार पूरा मोदी का परिवार नहीं आपका भी वही पूरा भारत हमारा परिवार है आप भी बोल सकते हैं 140 करोड़ देश सब मेरे हैं व हम स्कूल में तो बोलते ही थे ना कि भारत मेरा देश है सब भारत के लोग मेरे भाई बहन है मेरा परिवार है तो अगर आपने ने इससे चालू किया ऐसे बोलने के लिए नहीं ऑथेंटिकली जो लगता है जो जो लोगों को आपने अपने जीवन से निकाल दिया है उनको इंकलूड करो तो अखंड आनंद की यात्रा चालू होगी फिर धीरे धीरे करके आप बोलेंगे अभी सब मेरे ही है मैं सबका हूं सब धर्म मेरे सब गुरु मेरे सब संस्था मेरी सबब भगवान मेरे अभी मैं हम लोग उधर धरमपुर में गांव वालो का सब जूना जूना मंदिर रहता है ना गांव वालों के पास इतना ज्यादा पैसा नहीं है कि बड़े-बड़े मंदिर में जाए व लोकल जो उनका मंदिर रता है उसमें वो लोग पूजा करते हैं भगवान का नाम ते तो एक मंदिर वाले हमको आया बो हमारा मंदिर जूना हो गया है नया बनाना है राम जी का मंदिर

है तो आप हेल्प करो हमने उनको हेल्प की साकार ट्रस्ट की तरफ से बना के दिया फिर एक दूसरा आदमी आया उसने बोला हमारे गांव में भी राम का मंदिर है तो उसका भी धार करना है उनको भी हम तीसरा आदमी आया अभी उसका भी राम का मंदिर था तीन मंदिर आ ग तीनों का तीन एक अरनाला

भाग 1: भगवान की दिव्य शक्ति और हमारी सीमाएँ

एक अधा एक नानी ढोल तीनों के तीन मंदिर में हमने व्यवस्था कर दी अभी एक चौथा बंदर वो बेचारा हमको वो हिच आता था बोला आप लोग राम का मंदिर को हेल्प करते हैं हमारा हनुमान का मंदिर है आप करेंगे अरे मैं बोला भगवान की दिव्य शक्ति कहीं से भी प्रकट हो सकती है सब भगवान हमारे और हम सब भगवान के कोई सेपरेट नहीं है। य शंकराचार्य भी आपके हैं और वल्लभाचार्य भी आपके हैं सब हमारे हैं और हम सबके हैं। ऐसे अगर आपने अपने आप को विस्तृत कर दिया फिर सबकी सबके सुख सबके दुख सब आपके हो गए तो आपका जो खुद का दुख है ना जिसको आपने इतना बड़ा बना दिया है। देखिए जो दुख होता है ना उससे हमको कोई तकलीफ नहीं है दुख मतलब क्या सिचुएशन दुख मतलब क्या एक सिचुएशन है। समझ

लीजिए आपके घर में कुछ भी ऐसी सिचुएशन है किसी को कुछ बीमारी हो गई किसी को नौकरी नहीं लग रही किसी की शादी नहीं हो रही किसी को बच्चा नहीं हो रहा है किसी का झगड़ा है बोलते नहीं आपस में कुछ भी सिचुएशन ऐसी सिचुएशन होती है रेगुलर। अभी उसका दुख कैसे बढ़ता है आप बोलेंगे ये सिचुएशन तो बहुत खराब है आप जैसे वो सिचुएशन को बोलते ना ये बहुत डेंजरस है बड़ा रामायण है बड़ा महाभारत है बड़ी विकट परिस्थिति है यह बड़ी खतरनाक सिचुएशन है। ऐसा हम बोलते हैं ऐसा हमको लगता भी है। बोलते नहीं है हमको ऐसा लगता जितने हमारे लाइफ के प्रॉब्लम्स को हम और पेट्रोल डालते सिग्निफिकेंट बन जाते हैं और प्रॉब्लम हमको बड़े दिखते फिर हम छोटे बन जाते। पर आप जब दुनिया को देखेंगे दुनिया को भी अपना समझेंगे दुनिया के भी प्रॉब्लम बोलेंगे ये सब मेरे ही है तो आपके प्रॉब्लम फर छोटे हो जाएंगे।

भाग 2: करुणा और अपने आप को विस्तृत करने का महत्व

इसलिए मैंने अभी हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में कोर्स किया था बोलते कंपैशन करुणा जो है ना एकदम मेडिकली साइंटिफिक कोर्स था कंपैशन एज ए मेथड ऑफ हीलिंग। अब कुछ तबीयत खराब होई तो दवाई खाते ना

हम सब। दवाई एक शरीर को स्वस्थ करने का तरीका है उपवास भी शरीर को स्वस्थ करने का तरीका उपवास। वैसे बोलते करुणा भी अपने आप को स्वस्थ करने का एक तरीका है। करुणा में दूसरों पर उपकार नहीं करते आप खुद पर उपकार करते हैं। क्यों जब आपने करुणा रखी कंपैशन रखा दूसरों के प्रॉब्लम को आपने सोचा यह भी मेरे प्रॉब्लम यह भी मेरी समस्या है इसको भी मैं अपनाता हूं तो आपके प्रॉब्लम में तो आपका किधर दिमाग लगाने बैठेंगे किधर रोने बैठेंगे। इतना सारा करना है इसलिए जो लोग सोशल वर्क वगैरह में लगते हैं वो ज्यादा जीते हैं ज्यादा हैप्पी रहते हैं मतलब स्वस्थ रहते हैं। उनको बहुत करना है। मैं मुंबई में था एक अंकल थे अराउंड 78 80 बहुत धर्मपुर जाते थे हॉस्टल बनाने का ये बनाने का। उनके पास रिटाय थे पैसा नहीं था लेकिन उनका ड्रीम था मुझे एक लड़की लोगों का हॉस्टल बनाना है बना दिया। मर गए लेकिन बना के 80 85 तक जाते थे ट्रेन में सेकंड क्लास में बैठ के क्यों? जितना उस आप अपने आप को बड़ा करेंगे ना करुणा से आप हैं ही ये सिर्फ आपने शब्दों की जंजीरें लगाई हैं। आपको कोई जेल में डाला नहीं। आप मुक्त हैं। आपने शब्दों की जंजीरों से अपने आप को रिस्ट्रिक्ट कर लिया। चार्य कहते त्व घटित घटना पटी यसी माया। आप इतने अखंड इतने अनंत इतने विराट हैं।

अखंड आनंद स्वरूप की ओर

इतने सच्चिदानंद स्वरूप आप एक राजा भिखारी हो जाए चक्रवर्ती सम्राट भिखारी हो जाए वैसे आप अखंड आनंद स्वरूप आप दुखी पीड़ित लोगों से प्यार की भीख मांगते हैं अप्रवृत्त की, आपस की, दूसरे आपको अप्रिशिएट करें, ऐसी भीख मांगते हैं। ऐसा हो गया और जीवन आपको आनंद की अभिव्यक्ति और प्रेम की अभिव्यक्ति के बदले पीड़ा से छूटने का रास्ता दिखता है कि पीड़ा से कैसे छूटू। ऐसा हो गया तो घटित घटना पति जसी य माया का चमत्कार देखो। तोड़ दिया आपको माया ने। आपको अखंड को खंडित कर दिया जिसमें कोई खंड नहीं है अनंत है उसको छोटा बना दिया। अभी आपको वापस अखंड में जाना है अनंत में जाना है। अपने आप को विराट कर दो। वापस य भूल जाओ। य सब यह सब जादू की दुनिया में जो पड़े थे, मत सोचो ऐसा कि मैं फिर ब्राह्मणी हूं या बनिया हूं। ऐसे नहीं, सब मेरे और मैं सबका। और इमीडिएट जो अपना एनवायरमेंट है वहां से चालू करो। और जब आनंद और ज्यादा मिलेगा, सबको अपना लिया, सबको अपना मान या तो और आनंद मिलेगा। मिलता जाएगा और लोगों को जोड़ते रहो। किसी पर उपकार करने के लिए नहीं, खुद पर उपकार कर रहे जब आप किसी के दुख में कंधा देते हैं, किसी के आंसू

पहुंचते हैं, उस पर उपकार नहीं कर रहे। आप खुद पर उपकार कर रहे हैं। खुद को अखंड आनंद का रास्ता दिखा रहे हैं।

जीवन की प्रेरणा और प्रोत्साहन

इसलिए मैं हमेशा कहता हूं यह सेशन से सबसे ज्यादा लाभ आपकी मौजूदगी से मुझे हो रहा है। आपकी मौजूदगी, आप इतना इंटरेस्ट लेते हैं। अभी सैटरडे नाइट को सब लोग इतने इंटरेस्ट से, इतने प्यार से, इतने आदर से इसका अभ्यास करने आते हैं। तो मुझे भी प्रेरणा मिलती है, मुझे भी जोश आता है, प्रोत्साहन मिलता है। आप मेरे जीवन में कंट्रीब्यूट कर रहे हैं। कोई परिवार में पूछेगा ना कि क्या आप इतना रात बैठ का को पढ़ रहे हैं, का को सब सुन रहे हैं। बोलो इन भाई को हेल्प करने के लिए, उनकी खुशी के लिए, उनके आनंद के लिए हम सुनते हैं। आपको तो मिलेगा ही मिलेगा, मुझे बड़ी खुशी मिलती है। यह महान सांस्कृतिक परंपरा 1200 साल से जिनको हमने टिकाए रखा है, उसकी सब महान बातें हम भाग्यशाली है, उसका अभ्यास कर सकते हैं। और यह सब हमारे पास टेक्नोलॉजी है। मैं अमेरिका में हूं, आप इंडिया में है, बहुत सारे लोग को अमेरिका में भी होगा, कोई यूरोप में होगा और हम इसका अभ्यास कर सकते एक साथ, एक जगह

मिलकर। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज हमने सेकंड लास्ट लो कंप्लीट किया। अभी नेक्स्ट सैटरडे लास्ट थोड़ा जल्दी करेंगे क्योंकि नेक्स्ट सैटरडे मुझे काम है। तो मुझे लगता है इंडिया के 5 बजे या 5:30 को हम सेशन कंडक्ट करेंगे नेक्स्ट सैटरडे को 13 अप्रैल को। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। ये माया पंच कम के रास्ते से अखंड आनंद में आने के लिए थैंक यू थैंक यू वेरी मच एवरी बडी डॉक्टर लालका। जय श्री कृष्णा प्रफुल भाई ज कृष्णा जागृति बन, भास्कर भाई, रूमा बन, कपिल भाई, जय श्री कृष्णा, राजू भाई, रूपा बन, ज कृष्णा। ओके फिर हम लोग नेक्स्ट वीक मिलेंगे। आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद।, थैंक यू। बाय। ओके, बाय

माया पंचकम सत्र - 5

माया की ताकत को समझना

माया पंच कम के आज के लास्ट सेशन में फिफ्थ सेशन में आज माया पंच कम पाच स्त्र है लोक है एक स्त्र में। आज पांचवा श्लोक है, पांच वीक की यह यात्रा आज हम पूर्णाहति करेंगे और माया की जो शक्ति है माया की ताकत है उसे हम नमस्कार करेंगे क्योंकि वह भगवान की ताकत है भगवान की शक्ति है।

भ्रमण और कन्फ्यूजन

माया के बारे में चार श्लोक में हमने जो अभ्यास किया उसमें सबको यह तो पता चल गया होगा कि माया से माया की ताकत क्या है कि उससे एक भ्रमण पैदा होती है कन्फ्यूजन मिसअंडरस्टैंडिंग पैदा होती है। क्या कंफ्यूजन मिसअंडरस्टैंडिंग पैदा होती है भेदभाव की, हम भेदभाव करते हैं। यह मेरा यह तेरा मैं ब्राह्मण मैं हिंदू तुम जैन तुम यह मैं वोह, मैं गुजराती तुम मराठी, ऐसे हम अलग-अलग भेदभाव खड़ा करते हैं।

विद्युत देवी का उदाहरण

एक यूनिटी है एक रियलिटी है एक शक्ति है उसमें हम भेदभाव क्रिएट करते हैं। जैसे आपके घर में इलेक्ट्रिसिटी आती है मेरे घर में भी इलेक्ट्रिसिटी आती है अमेरिका में भी आती है इंडिया में भी आती है। अब मैं कहूँ ये मेरी इलेक्ट्रिसिटी है ना, उसका नाम विद्युत देवी है विद्युत देवी है मेरी इलेक्ट्रिसिटी का, आप बोलें विद्युत देव है आपकी इलेक्ट्रिसिटी का नाम। इलेक्ट्रिसिटी का कोई नाम नहीं शक्ति है उसका कोई नाम नहीं।

माया का असंभव पागलपन

है लेकिन मैं वो मेरी घर में जो इलेक्ट्रिसिटी आती है मैं कहूँ कि देखो मेरे को सब इतना सुख मिलता है य इलेक्ट्रिसिटी के कारण तो उसकी एक मैं मूर्ति बना दूँ य मेरी विद्युत देवी आप भी अपना एक मूर्ति बना दो फिर हम झगड़ा करें कि नहीं हमारी बात सही है तुम्हारी बात गलत है यह क्या है वव घटित घटना घटी पटी जसी माया ये एक असंभव पागलपन जो होना नहीं चाहिए ऐसा हो रहा है ये माया के कंट्रोल में माया के प्रभाव में हम ऐसा करते हैं।

शंकराचार्य के उदाहरण और जीवन में भेदभाव

अभी शंकराचार्य तो बहुत सारे उदाहरण दे रहे हैं मैं भी आज पांचवाँ श्लोक अभी पढ़ूँगा उदाहरण आप देखेंगे लेकिन आप वो उदाहरण में अ मत चले जाइए आप अपने जीवन को देखें क्योंकि यहां पर हम कोई फिलोसॉफिकल अभ्यास नहीं कर रहे चर्चा नहीं कर रहे माया पर बहुत चर्चा होती है मायावाद के ऊपर माया भगवान की शक्ति है इंडिपेंडेंट शक्ति है माया क्या है ब्रह्म का ही

स्वरूप है या नहीं है बहुत सारी चर्चा होती है हमको इसमें चर्चा में रस नहीं है हम प्रैक्टिकल आज रोकड़ा काले उधार आज अपने को 45 मिनट आपने अपना कीमती समय निकाला है आज आपको रोकड़ा फायदा होना चाहिए कैसे होगा आप जब अपने जीवन में देखेंगे आप कैसे भेदभाव करते हैं देखो जरा जब आप भेदभाव अपने जीवन में देखेंगे कैसे आप खड़े करते हैं यह मैं हूं यह मेरा है तुम अलग हो मैं अलग हूं हमारा धर्म अलग हमारी भाषा अलग हमारे संस्कार अलग हमारा यह अलग तुम्हारा वह अलग जाति अलग कैसे भेदभाव क्रिएट करते जरा देखो मेरी बहू अलग मेरा बेटा अलग तुम्हारी बहू अलग मेरा सब कितने भेदभाव क्रिएट करते हैं और यह भेदभाव से क्या दुख क्रिएट करते वो भी देखो।

भेदभाव के दुख और समाजिक फंक्शन

आपके जीवन में अभी वो नहीं कि बचपन में थे वैसे नहीं आज के जीवन में अभी इस वक्त किस तरह के आप भेदभाव क्रिएट करते जैसे कोई सामाजिक फंक्शन है या फैमिली का फंक्शन है आपके बदले किसी को ज्यादा माल मिल गया सब्जी बनाई थी चार लोगों ने आपने भी बनाई लेकिन एक दूसरी बहू को ज्यादा मान दे दिया अभी आप कैसे भेदभाव करते हैं मेरे को मान नहीं मिला उसको मिला जिसको मिला मान मिला ना अच्छी सब्जी का वो हो गया ना समाज में भी देखो काम होता है अच्छा काम होता है सब लोग मिलकर काम करेंगे तो अच्छा काम होगा झगड़े क्या होते मेरे को नहीं आगे बिठाया मेरे को मान सम्मान नहीं मिला उसको मिला हम ये नहीं खुश होते कि चलो मेरा

ही भाई है या मेरा ही को वर्कर है उसको भी मिलाना चलो अच्छी बात है मेरा मान यह भेदभाव मेरा मान मेरा सम्मान मेरा आदर मेरी प्रशंसा मेरा जयजयकार इसमें हम लगे मेरा पद झगड़े क्या है समाज में जाएंगे पॉलिटिक्स में जाएंगे आपको सेवा करनी है करो पॉलिटिक्स मतलब क्या है समाज की सेवा करने कितनी सेवा करने को पड़ी है।

सेवा की इच्छाएँ और माया का प्रभाव

कोई कमी है सेवा की। इतना सेवा का काम पड़ करो ना। नहीं मैं सेवा करू लेकिन मेरे को ये प्रेसिडेंट बनाओ वाइस प्रेसिडेंट बनाओ, कमेटी मेंबर बना मेरे। मेरे नाम के आगे लिखना चाहिए। यह जो हम यह माया के प्रभाव में एक आदमी प्रेसिडेंट है उसको रहने दो ठीक है। रहने दो। नहीं आप उसको हटाओ मुझे बनाओ तो बनाएंगे। क्या करेंगे? आप जो करना चाहते हो करने लगे। तो अपने जीवन में देखेंगे, अपने जीवन में देखेंगे कि माया के प्रभाव में आप कैसे डिवीजन पैदा करते हैं। आप कैसे भेदभाव पैदा करते हैं, कैसे दुख को दुख का सर्जन करते।

समाज में भेदभाव के उदाहरण

जैसे अभी एक देखो इंडिया में ऐ पहले बहुत होता था, अभी कम हो गया समझ लीजिए। एक सासू है, उनकी बेटी अगर कुछ करेगी उनकी बेटी कुछ खरीदेगी तो सासू बोलेगी ठीक है मेरी बेटी है। बह वही काम करेगी तो तो भेदभाव। ये मेरी बेटी है, वो उस दूसरे की बेटी है कितना भना एक मैं अभी छोटा सा ब्यब

वगैरह में वीडियो देख रहा था। एक बह ने आके सासू को बोला ननंद आ रही है फोन आया बोला ननंद आ रही है। सासू बोल रही है अरे वाह तो तुम काम करो कि दो। ऐसे वो बनाओ स्वीट्स बनाओ, अच्छा गुलाब जामू, समोसा बनाओ, दो चार सब्जी अच्छा बनाओ। ननंद आ रही है फिर उनके लिए यह करो। वो बच्चे आ रहे, बच्चों के लिए आइसक्रीम बनाओ। फिर व बहुत बोलती है नहीं, मेरी ननंद नहीं आ रही है आपकी ननंद आ रही है।

भेदभाव का परिणाम और माया का प्रभाव

मतलब पहले सास मेरी बेटी आ रही है मतलब बहुत की नन रही है। बहुत भी चालाकी से बोलती है नरधरा। फिर सासू बोलते हैं नहीं नहीं, ऐसा कुछ बनाने की जरूरत नहीं है। वो कल की सब्जी है ना वो दे देना। क्यों? क्योंकि वो जो आने वाली पहली दिव भेदभाव है ना। मेरी बेटी है और ये कौन है? ये तो क्या है? वो तो मेरी ननंद है। हम कैसे भेदभाव क्रिएट करते हैं वो देखना जरूरी है क्योंकि अगर आपने माया का प्रभाव आपके जीवन में नहीं देखा तो लाभ कैसे होगा? आप बोलेंगे हा ठीक है, ऐसा था। ऐसा पहले के जमाने में ऐसा था। नहीं, आज के जमाने में अभी इस वक्त आप माया के प्रभाव में हैं। अभी सुन रहे।

भेदभाव और स्वार्थ की पहचान

हैं जिसमें आप भेदभाव करते मेरा तेरा करते हैं जिसको आप मेरा समझते हैं उसको बहुत आप सर पर चढ़ाते हैं चलेगा। चढ़ाओ आपको जो मेरा समझते सर पर चढ़ाओ उसको लेकिन जिसको आप पराया समझते हैं उससे भेदभाव

करते द्वेष भाव करते हैं। दुख पैदा करते अपने लिए खुद के लिए आप जिनको पराया समझते वह आपको अपना समझते अपना समझ के चाहते हैं कि आप उनको मान सन्मान आदर प्यार मोहब्बत दो। आप नहीं देते आप बोलो यह मेरा नहीं है। वैसे आपने भेदभाव खड़े किए और भेदभाव से आप दुख को अनुभव करते।

आत्म निरीक्षण और संकल्प

अब देखो कोई कोई व्यक्ति के साथ आपको बात करना अच्छा नहीं लगता है। कोई कोई व्यक्ति के साथ बहुत आप बात करने के लिए उत्सुक रहते हैं। अब बच्चों को देखो बांबा बच्चे आते हैं शाम को बांबा पूरा दिन वेट करते मेरा बच्चा आएगा मेरा बच्चा आएगा। पूछते क्या हुआ बच्चे बोलते नहीं कुछ नहीं आज कुछ नहीं हुआ। उनके दोस्त का फोन आएगा तो आधा घंटा एक घंटा बात करते। क्यों भेदभाव करते ना ये मेरा दोस्त है ये मेरे मां बाप बहुत किट किट करते नहीं बात करनी उनसे उनको अपना नहीं समझते दोस्तों को समझते। ये भेदभाव हम क्रिएट करते हैं उससे हम दुख पैदा करते हैं।

धर्म, माया और आत्मबोध

इसका असर को देखना है और आज तो देखिए सब धर्मों का माया पंच कम और सब धर्मों का जन्म कैसे होता है। क्यों ये सब माया पंच गम और सब आत्म बोध आत्म शतकम अभी इसके बाद शंकराचार्य का हम सीरीज चालू करेंगे दक्षिणा मूर्ति स्त्र के ऊपर। शंकराचार्य ही बहुत बढ़िया मुझे तो बहुत

प्यार है। शंकराचार्य के ऊपर तो दक्षिणा म मूर्ति य सब क्यों स्तोत्र शंकराचार्य ने दो स स्तोत्र बनाए। क्यों और इतने आचार्य इतने गुरु इतने अवतार इतने तीर्थंकर क्यों क्या जरूर नीड क्या है। देखिए जो लोग बिजनेस करते हैं।

समाज में जरूरतों की व्यवस्था

ना व क्या कोई जरूरत होगी ना समाज में तो पूरा करने के लिए उसका वह पूरा करने जरूरत पूरा करने के लिए कुछ व्यवस्था हो जाएगी। आज देखो मुंबई में, मैं जब छोटा था 40 साल पहले, तो एक रेस्टोरेंट थी बोरीवली में स्टेशन के पास। वो साउथ इंडियन थाली देते थे हम लोग साल में एक बार जाते थे किसी का बर्थडे वगैरा साल में एक बार। स्टेशन के पास गोयल शॉपिंग सेंटर में अभी एक उसमें लिमिटेड इटली डोसा और थाली वगैरा। अभी एक एक गली में एक एक बिल्डिंग के नीचे तीन तीन रेस्टोरेंट है अलग अलग आइटम। क्यों? आदमी की नीड मुझे और खाना खाना है, अलग अलग खाना खाना है, अलग अलग य करना है। तो जिसकी नीड होती है ना वह व्यवस्था खड़ी होती है।

सुविधाओं की वृद्धि

जिसकी जरूरत है उसकी व्यवस्था खड़ी होती है। आज देखो मुंबई में फाइव स्टार हॉस्पिटल। फाइव स्टार हॉस्पिटल में भी मतलब फाइव स्टार फैसिलिटी के जरूरत है। लोग बोलते मैं बीमार हो गए लेकिन फैसिलिटी फाइव स्टार चाहिए। हो गई जितनी आपको जरूरत है ना उसकी व्यवस्था खड़ी होती जाती

है। समाज में जिस चीज की जरूरत है उसकी व्यवस्था प्रोवाइड होती है। देखो अमेरिका जाने के लिए कंसल्टेंट है, कनाडा जाने के लिए कंसल्टेंट है। कितने बोर्ड मारे हैं सब जगह पर मुंबई में इंडिया में पूरी जगह। लोगों को अमेरिका जाने की नीड है तो उसके लिए व्यवस्था हो गई। वेस्ट से हर एक व्यक्ति को जब आप कोई व्यवस्था देखेंगे ना तो उसका मतलब है कोई नीड है।

आध्यात्मिक नीड और व्यवस्था

आप लिक्स नहीं देखते होंगे लेकिन नेटफ्लिक्स में हजारों पिक्चर रिलीज होते हैं। उसका मतलब क्या है नीड है आदमी की पिक्चर देखना है मुझे नया नया। वैसे ये इतने स्तोत्र, इतने अवतार, इतने गुरु, इतने साधु क्यों खड़े हो गए? ये व्यवस्था क्यों खड़ी हो गई? क्योंकि एक नीड है। क्या नीड है? हर एक आदमी चाहता है कि मैं अखंड आनंद में रहूं। ये नीड पूरी करनी है सबकी, ये नीड है। झुठला नहीं सकते आप, भुला नहीं सकते। आप भी चाहते हैं। हर एक व्यक्ति के भीतर फंडामेंटल मूलभूत प्यास लगती है, भूख लगती है। वैसे नीड खड़ी है मुझे अखंड आनंद चाहिए। कभी खुशी कभी गम नहीं चाहिए। अभी खुशी फिर वापस दुख आएगा ऐसा नहीं। मेरे को अखंड आनंद चाहिए। यह नीड है। यह नीड पूरी करने के लिए यह सब व्यवस्था माया पंचक, दक्षिणा मूर्ति सूत्र, आत्म बोध, आत्म शतकम। यह नीड पूरी करने के लिए व्यवस्था है।

अखंड आनंद की नीड और माया पंचक

अभी अखंडानंद की जो आपको नीड है वह माया पंचक में एक अलग रास्ता दिखता है। शंकराचार्य अलग अलग रास्ता दिखाते हैं और किसी को कुछ किसी को कुछ पसंद आ जाता है। तो हमारी यह जो नीड पूरी करने के लिए सब अभी आप एक में आज का श्लोक चालू करूना। उसके पहले एक आप मन में सोच लो, एक मन में ऐसा कमिटमेंट उठा लो कि आप किसी दूसरे व्यक्ति को अखंड आनंद में लाने का प्रयास करेंगे। खुद को भूल जाओ पाच ये एक वीक के लिए खुद को भूल जाओ। आपके घर में होंगे ना लोग: पति पत्नी, भाई बहन, सासु ससुर जी, मां बाप, बेटा बेटी, बहु। बहु को ले लो, इसको मुझे अखंड आनंद में रखना है।

दूसरों को अखंड आनंद में लाने का प्रयास

इसको कभी दुख होना ही नहीं चाहिए, एक वीक के लिए सोचो जरा ऐसा। आपने कमिटमेंट उठा लिया अखंड आनंद में रखना है। सब बच्चे चाहते हैं ना, सब मां बाप चाहते बच्चों को बोलते सुखी रहो, सुखी रहने का आशीर्वाद देते। आप अभी कमिटमेंट उठाओ इसको अखंड आनंद में रखना है। खुद को भूल जाओ, फिर आपको ये एहसास होगा कि किसी को अगर अखंडानंद में लाना है तो क्या क्या पापड़ बेलने पड़ेंगे, क्या क्या दीप सोचना पड़ेगा। ये शंकराचार्य का आज का श्लोक लेते हैं हम, उन्होंने कितना सोचा है, उनकी करुणा, उनकी प्रगड़ करुणा है। उनकी हमको अखंड आनंद में आ जाने के लिए इतनी प्रगड़ करुणा। वो तो पहुंच गए, वो तो अखंड आनंद में है, सच्चिदानंद में है।

माया की ताकत और शंकराचार्य का स्तोत्र

हम आ जाए, हम कभी खुशी कभी गम में हैं। हम भी वहां जाना चाहते हैं, हमारे अंदर भी यह प्यास है। हम कैसे आ जाए? वो करुणा से उन्होंने अलग अलग स्तोत्र बनाए हैं। आज का स्तोत्र पढ़ते हैं हम, विधि हरि हर भेद। **विधि हरि हर विभेद** पखन बत विर बुध बुद्धन प प्रका भ्रम हरि। हर भेद भावा न घटित घटना घटी पटी यसी माया। इसका मतलब क्या है कि माया क्या करती है? असंभव न घटित घटना घटी पटी यसी माया। क्या असंभव क्रिएट करती है कि वो ब्रह्मा विष्णु महेश ऐसे भेदभाव क्रिएट करती, एक ईश्वर की शक्ति है। उसमें ब्रह्मा विष्णु महेश के भेदभाव क्रिएट करती है, क्या माया का ताकत।

दुख और भेदभाव का प्रभाव

है अभी आप इसको समझेंगे इसका अभ्यास करेंगे देखिए कि हम सब दुख में हैं। समाज में हम हमारे दुख क्यों पैदा करते हैं? समाज में हम भेदभाव क्रिएट करते हैं, अपने परिवार में भेदभाव क्रिएट करते हैं। भेदभाव क्रिएट करके हम दुख पैदा करते हैं। अभी दुख पैदा हो गया, अभी हमको चाहिए अखंड आनंद। तो हम आध्यात्म में जाते हैं, धर्म में जाते हैं। यह संसार, यह पैसा, यह समाज के सब नीति-नियम, उसकी दौड़, वो छोड़ के हम जाते हैं। अभी हमको धर्म में जाना है, बस आध्यात्म में जाना है।

धर्म में भी भेदभाव

अभी क्योंकि आदमी जब आध्यात्म में धर्म में जाता है, वो दिमाग तो माया से पूरा प्रभावित है। दिमाग तो माया के कंट्रोल में है, मन पूरा माया के कंट्रोल में

है। पहले संसार में भेद क्रिएट करता था कि मैं पैसे वाला, ये गरीब, मैं ऊंची जाति का, ये नीची जाति का, मैं यह धर्म का, मैं यह भाषा का, मैं यह जाति का, मैं पढ़ा-लिखा, मैं रूपवान। ऐसा भेदभाव समाज में क्रिएट करते थे। अभी धर्म में जाते हैं, वही व्यक्ति वह क्या करेंगे? धर्म में भेदभाव क्रिएट करते हैं। जहां गए अखंड आनंद को पाने, सबको प्यार बांटने। धर्म का, अध्यात्म का अल्टीमेट ऑब्जेक्टिव क्या है? आपका मन में प्यार, ऐसा आनंद भर जाए सबके प्रति। आनंद सबके प्रति प्रेम।

माया का प्रभाव और भेदभाव का उदाहरण

अभी वह व्यक्ति, क्योंकि माया के कंट्रोल में है, धर्म में जाते हैं, धर्म में सब भेदभाव क्रिएट करते हैं। क्या असंभव घटना? जैसे मैं आपको एक उदाहरण देता हूं तो थोड़ा ज्यादा क्लियर होगा। कैसे हम भेदभाव क्रिएट करते हैं? समझ लीजिए कोई एक महापुरुष है, महान व्यक्ति है, उनके चार बेटे। जैसे मेरे दादा जी के तीन बेटे, एक बेटी। पहले के जमाने में चार बेटे समझो। महापुरुष, महान व्यक्ति, मेरे दादाजी बहुत महान व्यक्ति थे। उनके चार संतान हैं, अभी दादाजी तो एक ही है पर चार संतान हैं। दादा जी के अलग-अलग फोटो होते हैं। किसी को दादा जी का धोती वाला फोटो पसंद है। मेरे दादा जी धोती पहनते थे तो अपने घर में धोती का फोटो लगाएंगे। दादा जी धोती पहने हैं, टोपी पहनते, टोपी वाला। किसी को टोपी पसंद नहीं है, तो टोपी बिदाउट टोपी का फोटो लगाएंगे। अब एक आदमी के 500 फोटो।

दादा जी की सीख और परिवार का संदेश

होंगे तो दादा जी अभी तो दादा जी एक है। चार बच्चों को बोल के गए कि भाई, आप खुशी से रहना, आनंद से रहना, मिलजुल के रहना। चार बच्चों के घर अलग तो सब अलग-अलग फोटो लगाएंगे। कोई दादा जी का जवानी का, कोई बुढ़ापे का, कोई धोती वाला, कोई पेंट वाला। अलग-अलग लगाएंगे। अपनी अपनी जी को जो बच्चे को जो भाव आएगा वह लगाएंगे। अभी समझो 20 जनरेशन हो गई, अभी वही जिसके घर में जो फोटो है वही रहेगा। चालू रहेगा ना। मेरे घर में मेरे दादा जी का फोटो है तो मेरे बच्चे, उसके बच्चे, उसके बच्चे फिर वही सोचे यही अपने दादाजी वही फोटो रहेगा।

परंपराओं का विवाद और समय का प्रभाव

20 जनरेशन हो गई, 500 साल हो गए। फिर वह सब एक फोटो वाले जो होंगे, जिन्होंने दादा जी का धोती वाला फोटो रखा है और एक जो है वह दादा जी का जवानी का पेंट वाला फोटो रखा है। 500 साल के बाद अभी वो झगड़ा करेंगे। एक दूसरे के घर पर अटैक करेंगे कि ये पेंट वाला फोटो निकालो, धोती वाला फोटो रखो। य गलत है, आप दादा जी का अपमान कर रहे हैं। निकालो। ऐसा करेंगे तो, तो घटना घटी पटी जैसे आप लोगों का पागलपन। ऐसा करना नहीं चाहिए। एक ही दादा जी, एक ही भगवान बोल के गए, एक बोल के गए, मैं एक हूँ, ये फोटो मेरे अलग-अलग है तो पागलपन लगेगा। यही पागलपन हर एक धर्म में होता है, हर एक गुरु के साथ होता है।

धार्मिक भेदभाव और शांति की खोज

एक ही हमारे भगवान कृष्ण हैं पर अलग-अलग लोग कृष्ण भगवान का कोई अलग नाम देगा, कोई अलग कृष्ण भगवान का छोटा का फोटो, बचपन का फोटो, कोई बड़े का फोटो, कोई ये फोटो, कोई वो फोटो। झगड़े करते। हर एक धर्म में देखेंगे, क्रिश्चन धर्म में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट जीसस को मानते। मुसलमान इस्लाम धर्म में देखेंगे सिया और सुन्नी सब मानते हैं रसूल नबी को, मानते मोहम्मद पैगंबर को। जैन धर्म में देखेंगे स्वेतांबर और दिगंबर सब महावीर भगवान को मानते हैं। स्वयं बोलते हैं सब एक है, आत्मा एक है, आत्मा का कोई नाम थोड़ी है। बुद्ध में देखेंगे भगवान बुद्ध तो बोलते आत्मा भी नहीं है, उसका भी महायान, हीनयान। कितने भेदभाव उसमें भी, भेदभाव, भेदभाव, भेदभाव। यह माया का प्रभाव देखो। जो झगड़ा करते हैं मारामारी, एक ही भगवान, उसके अलग-अलग स्वरूप। तो जहां हम गए शांति पाने।

धर्म और अध्यात्म की शक्ति

धर्म अध्यात्म की दुनिया में गए शांति पाने गए कि भाई चलो शांति से आनंद से अखंड आनंद में जाएंगे। वहां भी क्योंकि माया का माइंड है वहां झगड़े क्रिएट करते हैं। अभी शंकराचार्य ने 1200 साल पहले कहा कि वो हरि हर शंकर अलग ये अलग विष्णु अलग ऐसे झगड़े करते हैं। इसलिए शंकराचार्य ने पंचायतन पूजा दी क्योंकि वो जो विष्णु शंकर देवी गणेश ये जो हमारी अलग-अलग लोगों की मान्यता थी बोला सब एक साथ पूजा करेंगे सब एक ही है। एक ही भगवान के अलग-अलग स्वरूप है, एक ही शक्ति के अलग-अलग स्वरूप है। लेकिन वो झगड़े उस वक्त थे इस वक्त भी हैं।

सेवा और भक्ति का महत्व

लोग सोचते हैं मैं ये गुरु में मानता हूँ। एक ही गुरु अगर गुजर जाते हैं तो उसके चार फिर वो बन जाते हैं। आपको यह नहीं बोलना है, यह नहीं सोचना, उन पर वैल्यू जजमेंट नहीं करना। आपको देखना है कि आप कैसे उसको डिवाइड करते हैं, आपके जीवन में कैसे आप आध्यात्मा में भी डिवाइड करते हैं। मैं अलग, वो अलग, हम इसमें मानते हैं, वो उसमें मानता है। जैसे मैं यहां पर हमने एक सोचा है साकार में कि सब लोग सब धर्म वगैरे में जाते हैं। लेकिन पैसा जनरली ज्यादा कोई देते नहीं। अब देखो जरा हमारा आदमी का स्वभाव देखो।

अखंड आनंद की प्राप्ति

बच्चे की शादी है, केटर बोलेगा केटरिंग का कांट्रैक्ट देना। केटर बोलेगा यह थाली है, एक थाली है, एक फर्सन, एक मिन। उसका सा सरप 450 य दूसरी थाली है, दो फर्सन, दो मिन और एक पानीपुरी काउंटर। लेकिन उसका आदमी क्या बोलेगा 000 रुप वाली थाली रखो, मेरा भी नाम होना चाहिए समाज में क्या खाना खिलाया। वही आदमी मंदिर में जाएगा, भगवान का दर्शन करेगा, व डोनेशन का बॉक्स होएगा। पॉकेट से पैसा निकालेगा, तो 500 की नोट है, 100 की नोट है, 50 की नोट है, 20 की नोट है, 10 की नोट है। सबसे छोटी नोट जो होगी ना, व भगवान को देगा तब नहीं सोचेगा। यह मेरे भगवान है चलो उनको 00 दे दो। नहीं, कैटरिंग बच्चे का करना है, डेकोरेशन करना है तो हाईएस्ट, भगवान का कुछ करना है तो लोएस्ट।

धर्म और अध्यात्म की शक्ति

धर्म और अध्यात्म की दुनिया में हम शांति पाने जाते हैं, लेकिन माया के माइंड से वहां भी झगड़े क्रिएट होते हैं। शंकराचार्य ने 1200 साल पहले हरि, हर, शंकर, विष्णु के बीच झगड़े सुलझाने के लिए पंचायतन पूजा दी, जिसमें सभी देवताओं की एक साथ पूजा होती है। यह मान्यता है कि सभी देवता एक ही भगवान के अलग-अलग स्वरूप हैं। हालांकि, उस वक्त के झगड़े आज भी जारी हैं।

सेवा और भक्ति का महत्व

लोग अक्सर सोचते हैं कि वे एक ही गुरु को मानते हैं, लेकिन उनके गुरु के गुजर जाने के बाद उनके चार नए गुरु बन जाते हैं। इस स्थिति में वैल्यू जजमेंट नहीं करना चाहिए। हमें देखना चाहिए कि हम अपने जीवन में कैसे विभाजन करते हैं। जैसे साकार में सब धर्मों में जाते हैं, लेकिन जनरल डोनेशन कम होता है। हमारा स्वभाव ऐसा है कि हम शादी में केटरिंग में उच्चतम खर्च करते हैं, लेकिन भगवान के लिए सबसे छोटी नोट देते हैं।

अखंड आनंद की प्राप्ति

हमने अमेरिका में भी भक्ति का विराम नवमी, चैत्री नवरात्रि, और राम नवमी के समय उपवास और डोनेशन के कार्यक्रम आयोजित किए हैं। साकार में हम जितना हो सके उतना समर्थन करते हैं। इस महीने कई कार्यक्रमों में भाग लिया गया, जिसमें 21 तारीख और 27 तारीख के कार्यक्रम शामिल हैं। जब हम अन्य मंदिरों का समर्थन करते हैं, लोग सवाल उठाते हैं। हमें समझना चाहिए कि सभी मंदिर एक ही शक्ति की आराधना कर रहे हैं।

समाज में भेदभाव

लोगों के मन में भेदभाव होता है कि कौन किस धर्म का समर्थन करता है। हमें सभी धर्मों को एक मानना चाहिए। महावीर, बुद्ध, क्राइस्ट, राम, कृष्ण, गीता, उपनिषद, शंकराचार्य, वल्लभाचार्य सभी हमारे हैं। अगर हम यह भेद छोड़ देंगे, तो दुख कम होगा। हमें अपने परिवार और दोस्तों को अखंड आनंद में ले जाना है।

छोटी-छोटी बातों का महत्व

अगर आप ऑब्जर्व करेंगे कि आपकी बहू, बेटी, या बेटा अखंड आनंद में क्यों नहीं रहते, तो पाएंगे कि वे छोटी-छोटी बातों को इंपॉर्टेंस देते हैं। छोटी-छोटी बातों को महत्व देने से वे दुखी हो जाते हैं। हमें उन्हें यह सिखाना होगा कि छोटी बातों को महत्व देना बंद करें। उदाहरण के लिए, अगर बेटे को कम मार्क्स मिले तो उसे इतना दुखी नहीं होना चाहिए।

जीवन में संतुलन

जीवन में हजार चीजें होती हैं, हमें छोटी बातों का महत्व नहीं देना चाहिए। हमें उन बातों को इंपॉर्टेंस देनी चाहिए जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं। हमें अपने बच्चों को सिखाना चाहिए कि स्कूल के मार्क्स और कैप्टन होना महत्वपूर्ण है, लेकिन छोटी बातें नहीं।

जीवन में महत्वपूर्णता बदलने का रहस्य

अगर आपके साथ कोई बच्चा चेस खेलता है और हारने पर रोने लगता है, तो उसे शांत करने के लिए क्या करें? बच्चों को सीखाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उन्हें समझाएं कि चेस केवल एक खेल है। अगर बच्चा हारने पर रोता है, तो उसका ध्यान दूसरी महत्वपूर्ण चीज़ों में लगाएं। जब आपके जीवन में कुछ और महत्वपूर्ण हो जाता है, तो छोटी-छोटी बातें अपना महत्व खो देती हैं। जैसे, लोग कहते हैं कि भगवान सबसे महत्वपूर्ण हैं। हमारे पुष्टि मार्ग में भी यही सिखाया जाता है। जब आप बाजार में मैंगो लेने जाते हैं, तो आप अपने लिए नहीं बल्कि भगवान के लिए लेते हैं। जब भगवान सबसे महत्वपूर्ण हो जाते हैं, तो बाकी सब चीज़ें अप्रासंगिक हो जाती हैं। अगर भगवान के लिए मैंगो नहीं मिला, तो हम कहते हैं कि यह भगवान की इच्छा है।

भगवान की सेवा का महत्व

वल्लभाचार्य जी सिद्धांत रहस्य में बताते हैं कि जो चीज़ भगवान को समर्पित नहीं है, उसे नहीं लेना चाहिए। वैष्णवों का नियम है कि भगवान के लिए समर्पित चीज़ ही लेनी चाहिए। जैसे ठंडी आ जाने पर भगवान को स्वेटर पहनाना। भगवान का सुख और आनंद महत्वपूर्ण हो जाता है, और हमारे खुद के सुख-दुख अप्रासंगिक हो जाते हैं। भगवान की सेवा के इस मार्ग में, हम अपने छोटे-छोटे दुखों और समस्याओं को भूल जाते हैं।

छोटी समस्याओं से ऊपर उठना

अगर आप किसी को अखंडानंद में लाना चाहते हैं, तो उसके जीवन में कुछ और महत्वपूर्ण बनाएं। नहीं तो वह हमेशा अपने छोटे-छोटे दुखों के बारे में ही

सोचता रहेगा। शरीर में कुछ ना कुछ गड़बड़ होती रहेगी, और डॉक्टर के पास जाने का कोई मतलब नहीं है। डॉक्टर भी आखिरकार सोने की दवा देते हैं ताकि दिमाग शांत हो जाए। छोटे-छोटे प्रॉब्लम्स आपको अखंड में नहीं ले जा सकते। उनकी कोई समाधान नहीं है, बस उन्हें भूल जाना ही एक रास्ता है। हर प्रॉब्लम की महत्वपूर्णता को कम करें।

प्रॉब्लम की महत्वपूर्णता

किसी भी प्रॉब्लम को आप कितनी महत्वपूर्णता देते हैं, वह आपकी तकलीफ को बढ़ा देती है। अमेरिका में हर दूसरी शादी में डिवोर्स होता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हर मां बाप दुखी हो जाएं। कितने साधु महात्मा शादी और बच्चों को छोड़कर साधु बन जाते हैं, और हम उन्हें सेलिब्रेट करते हैं। महत्वपूर्णता बदलने से जीवन के प्रति नजरिया बदल जाता है।

इस लेख में, हमने यह सीखा कि जीवन में दूसरी चीजों को महत्वपूर्ण बनाकर, छोटी समस्याओं से ऊपर उठ सकते हैं। भगवान की सेवा और उनके सुख को सबसे महत्वपूर्ण मानकर, जीवन में सुख और शांति पा सकते हैं। छोटी-छोटी समस्याओं को भूलकर, जीवन को अखंडानंद में जी सकते हैं।

अखंडानंद प्राप्ति का मार्ग

आपके शरीर और मन पर प्रभाव डालने वाली चीजों से दूर होकर कुछ नया महत्वपूर्ण बनाने पर आप अखंडानंद पा सकते हैं। अखंडानंद का एकमात्र रास्ता यह है कि भेदभाव छोड़ें। जैसे हरि, हर, ब्रह्मा, विभिन्न मंदिरों का भेदभाव छोड़ें। मैं तो कभी-कभी चर्च भी जाता हूं, जहां चर्च वाले बुलाते हैं। वहां भी वही

भगवान है। लोगों को इससे गुस्सा आता है, पर मैं उनसे झंझट नहीं करता। एक ही तत्व है, जिसकी अलग-अलग अभिव्यक्ति है।

गुरु का महत्व और आत्मस्वरूप

जब तक आपने स्वयं को महत्वपूर्ण बनाया, तब तक अखंडानंद नहीं पा सकते। हमारे धर्म में गुरु का महत्त्व इसलिए है कि गुरु को महत्वपूर्ण बनाएं। एक गुरु के हजारों शिष्य होते हैं, जैसे शंकराचार्य के लाखों शिष्य होते हैं। हम शंकराचार्य के शिष्य हो गए और उन्हें फॉलो कर रहे हैं। गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देव महेश्वरा का महत्व समझें। शंकराचार्य कहते हैं, "अहम निर्विकल्प निराकार रूपो स सर्वेद्र सदा में सम मुक्ति बंद चिदानंद रूपम शिवम शिव।" आप चिदानंद स्वरूप हैं, यह स्वीकार कर लें।

सेवा और दूसरों का आनंद

भारतीय संस्कृति में सेवा का महत्व है, सेवा का मतलब है कि आपने दूसरे को महत्वपूर्ण बना दिया। जैसे, मुझे माया पंच कम का कार्यक्रम करना था, और मेरे लिए क्या महत्वपूर्ण है? यह नहीं कि मुझे खाना मिल रहा है या नहीं। मेरा ध्यान इस पर है कि हमारे साधकों को अखंड आनंद कैसे मिल सकता है। आपके आनंद के ऊपर ध्यान केंद्रित करने से हम ऑटोमेटिक अखंड में आ जाते हैं।

अखंड आनंद का रास्ता: सेवा का भाव

अखंड आनंद में जाने का रास्ता एक ही है कि जब आपका सेवा का भाव दूसरों के प्रति हो जाए। दूसरों के प्रति सेवा का भाव रखकर आप अखंड आनंद प्राप्त कर सकते हैं। एक ही रियलिटी है और वह है आप। जब आपका पूरा ध्यान दूसरों पर केंद्रित हो जाए, तो आप अखंड आनंद में आ जाते हैं। हाउसवाइफ मदर के उदाहरण से समझें: वे अपने बच्चों और परिवार के लिए काम करती हैं, उनका पूरा ध्यान दूसरों पर होता है। इस सेवा भावना से वे हमेशा खुश रहती हैं।

सेवा का महत्त्व: दूसरों की खुशी में अपनी खुशी

आपको हमेशा सेवा के काम में लगना चाहिए। सेवा का बड़ा काम है कि आप अपने ज्ञान और अनुभव को दूसरों के साथ साझा करें। जैसे माया पंच कम के पांच लोग जीवनदाई बातें साझा करते हैं और एक नया आनंद का मार्ग खोलते हैं। यह सेवा का भाव आपके जीवन में अखंड आनंद लाता है। शंकराचार्य के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यह है कि आप दूसरों को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करें।

सेवा में लगना: अखंड आनंद का एकमात्र मार्ग

सेवा की भावना के साथ आप अखंड आनंद में रह सकते हैं। भगवान की सेवा, दूसरों की सेवा और परिवार की सेवा से आपको प्रेरणा मिलनी चाहिए। सेवा के लाखों काम हैं, और आपको अपनी प्रेरणा के अनुसार सेवा में लगना चाहिए। सेवा करके आपको जो आनंद मिलता है, वह सबसे बड़ा पुरस्कार है।

**यह माया पंच कम का कार्यक्रम भी आपकी सेवा के लिए ही किया गया है
ताकि आप अखंड आनंद पा सकें।**